04 - भारत ने नहीं झुकाया सिर, दिया करारा जवाब

05 - एआई का जमाना और लेखकीय संवेदना

A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 6 अगस्त, 2025

06 - रक्षाबंधन को लेकर सज गए बाजार, ट्रैफिक प्लान तैयार नहीं

07 - कस्टम हायरिंग योजना से बदली किसान की किस्मत...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 328, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत ड्रोन तकनीक पर ध्यान दे, यही हमें सैन्य महाशक्ति बनाएगा

ले.जन. एच.एस. पनाग (रि.)

दुनियाभर में माना जा रहा है कि ऑपरेशन सिंदूर को पहला आधुनिक 'एयर वॉर' है, जिसमें बराबर की तकनीकी क्षमता रखने वाले प्रतिद्वंद्वियों ने हवा से हवा में और जमीन पर मार करने वाली मिसाइलों का इस्तेमाल किया। वैसे, 88 घंटे चली उस लड़ाई में चंद घंटे तक ही हवाई ताकत का बोलबाला रहा जब भारतीय वायुसेना ने आतंकवादी अड्डों पर हमले किए और इसके बाद 6-7 मई की रात में जब हवाई युद्ध हुआ; और जब उसने 9-10 मई की रात में अंतिम प्रहार के तहत पाकिस्तान के हवाई अड्डों, रडारों, और कमांड व कंट्रोल इन्फ्रास्ट्रक्चर को निशाना बनाया।

वास्तव में, करीब 60 घंटों तक मानव रहित एरियल सिस्टम (यूएएस) लड़ाई में हावी रहे। इसलिए, कुछ विश्लेषणकर्ता इसे इस उपमहादेश का 'पहला ड्रोन युद्ध' कह रहे हैं। वैसे, गंभीर आकलन संकेत करता है कि यूएएस ने अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं किया, और यह दोषपूर्ण सिद्धांत और चाल के साथ-साथ गुणवत्ता और परिमाण की कमी को भी दर्शाता है।

अब 'एयर लिट्टोरल' यानी पारंपरिक थल सेना और हजारों फीट की ऊंचाई पर उड़ रहे फाइटर विमान के बीच के नए हवाई विस्तार पर यूएएस का वर्चस्व हो गया है। इस 'एयर लिट्टोरल' पर, जिसमें 'यूएएस' और जवाबी 'सी-यूएएस' सिस्टम्स के बीच वर्चस्व स्थापित करने की लड़ाई होगी, नियंत्रण और प्रभुत्व ही भावी युद्धों का नतीजा तय करेगा। ड्रोन टेक्नोलॉजी में इतनी तेजी से प्रगति हो रही है की सैन्य टेक्नोलॉजी के मामले में दुनिया का अगुआ अमेरिका भी पीछे छूट गया है। 'सबकी पहुंच में आने वाला' 'यूएएस' एक उभरती ताकत, भारत के लिए पसंदीदा हथियार बन सकता है। चीन को ड्रोन के मामले में दुनिया का नेता माना जा रहा है, और पाकिस्तान भारत का समकक्ष प्रतिद्वंद्वी है। भारतीय सेना को यूएएस को अपने बदलाव का आंतरिक हिस्सा बनाने की जरूरत है, और यह काम तेजी से पूरा किया जाना चाहिए।

भारत और पाकिस्तान निगरानी और टोही गतिविधियों के लिए यूएएस का इस्तेमाल करीब 25 वर्षों से कर रहे हैं, लेकिन हथियारबंद 'यूएएस' का इस्तेमाल अभी पांच वर्षों से शुरू हुआ है। लेकिन आश्चर्य की बात है की अभी भी यह शुरुआती चरण में ही है, जिसकी कोई वजह नहीं नजर आती। ऐसा लगता है कि दोनों देश बेहद महंगे पारंपरिक वेपन सिस्टम्स के प्रति ही सम्मोहित हैं। और वे आधुनिक युद्धकला में विमान तथा टैंक के आविष्कार के बाद लागत का सबसे ज्यादा लाभ देने वाले तकनीकी आविष्कार के असर को समझने में विफल रहे हैं।

पाकिस्तान ने भारी संख्या में ड्रोनों का इस्तेमाल किया, लेकिन उनमें वह न्यूनतम मूल विशेषता नहीं थी जो उन्हें प्रभावी बनाती है। भारतीय ड्रोन आक्रमण में उत्कृष्टता थी लेकिन व्यापक विध्वंस के लिए संख्याबल में कमी थी। मेरा आकलन है कि भारत ने विभिन्न तरह के 150 ड्रोनों का इस्तेमाल किया। भारतीय यूएएस अत्याधुनिक थे; लेकिन उनकी संख्या मिशन के पैमाने के हिसाब से अपर्याप्त थी। भारत ने नौ में से सात आतंकी अड्डों और कुछ दूसरे ठिकानों पर हमला करने के लिए सेना के वॉरमेट (पोलैंड), स्काईस्ट्राइकर (इजरायल), नागस्त्र (भारत) सामरिक ड्रोनों का इस्तेमाल किया। ड्रोनों का इस्तेमाल टोही गतिविधि के लिए भी किया गया और 10 मई को सीमा पार घुसकर वायुसेना के हमलों से पहले एअर डिफेंस सिस्टम को नाकाम/नष्ट करने के लिए भी किया गया। सामरिक ठिकानों पर हमला करने के लिए भी सीमित संख्या में देसी सामरिक ड्रोनों का इस्तेमाल किया गया। ऐसे अधिकतर ड्रोनों को दुश्मन के एअर डिफेंस सिस्टम ने रोक दिया। यहां यह बता देना उपयुक्त होगा कि एक हारोप ड्रोन की कीमत 7 लाख डॉलर है। सस्ती टेक्नोलॉजी के तहत यूक्रेन और रूस ऐसे ही यूएएस इसकी 25 फीसदी के बराबर लागत पर बना रहे हैं।

उस स्थिति की कल्पना कीजिए जब भारत या पाकिस्तान के पास बड़ी तादाद में उत्कृष्ट ड्रोन होंगे। तब वे 'एयर लिट्टोरल स्पेस' में हावी होंगे और दुश्मन के एअर डिफेंस सिस्टम पर पर ड्रोन छाये होंगे या उसे नष्ट कर रहे होंगे, जबकि बहुत ऊंचाई पर उड़ते फाइटर विमान दुश्मन के काफी बड़े ठिकानों और विमानों को निशाना बना रहे होंगे। जमीनी लक्ष्यों और 'एईडब्लू-एंड-सी' विमानों तक को निशाना बनाने के लिए मीडियम/लॉन्ग रेंज वाले ड्रोनों का इस्तेमाल किया जा सकता है। वास्तव में, सामरिक/ऑपरेशन सम्बंधी/रणनीतिक स्तरों पर 'केवल ड्रोनों' के बूते ऑपरेशन चलाना संभव होने वाला है।

ऊपर जो संभावनाएं गिनाई गई हैं वे कोई कपोल कल्पना नहीं हैं, उन्हें टेक्नोलॉजी और आर्थिक दृष्टि से संभव किया जा सकता है। खासकर तब जबकि अत्याधुनिक हथियारों को हासिल करने के लिए रक्षा बजट में बड़ी वृद्धि नहीं की जा सकती। इसमें कोई शक नहीं रह जाना चाहिए कि सस्ते, छोटे, सर्वव्यापी, और सुलभ यूएएस आधुनिक युद्धक्षेत्र पर हावी हैं इसे ध्यान में रखकर कर भारतीय सेना को ड्रोन युद्ध के अपने सिद्धांत को स्वरूप देना चाहिए और इसे सेना में हो रहे बदलाव का अंतरंग हिस्सा बनाना चाहिए। व्यापक स्तर पर, लंबी दूरी वाले कीमती ड्रोनों की रणनीतिक तैनाती का तीनों सेनाओं से जुड़ा एकीकृत कमांड के गठन पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। इस तैनाती में स्पेशल फोर्स और बाहरी फोर्स के ऑपरेशनों को भी शामिल किया जाना चाहिए। थिएटर स्तर पर तैनाती के मामलों के लिए थिएटर स्तर पर एकीकृत संगठनों का निर्माण किया जाना चाहिए। हर सेना की जरूरत के हिसाब से सामरिक संगठनों की भी जरूरत होगी। काईनेटिक और नॉन काईनेटिक 'सी-यूएएस' संगठनों को एकीकृत एयर डिफेंस कमांड एंड कंट्रोल का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। सेना में, विशेष ड्रोन शाखा को संयुक्त आर्म्स का हिस्सा जरूर बनाया जाए।

भारत में सक्षम ड्रोन उद्योग मौजूद है, और इसकी टेक्नोलॉजी में हर दिन विकास हो रहा है। ड्रोनों मे मामले में अवधारणा से युद्ध के मैदान तक पहुंचने में छह महीने से ज्यादा नहीं लगना चाहिए। उच्च टेक्नोलॉजी वाले पुराने वेपन सिस्टम्स की खरीद की समीक्षा की जाए। भारत को यूएएस के विकास के लिए वार्षिक बजट तय कर देना चाहिए। 2 अरब डॉलर का न्यूनतम वार्षिक ड्रोन बजट मौजूदा कमी को पूरा कर सकता है और 5 अरब डॉलर का बजट हमें प्रमुख ड्रोन महाशक्ति बना सकता है। रूस-यूक्रेन युद्ध ने ड्रोन युद्ध के विकास, पैमाने, और संभावना का प्रत्यक्ष नजारा दिखाया। ऑपरेशन सिंदूर उसका एक लघु रूप भर था। मेरा अनुमान है कि चीन या पाकिस्तान से अगले युद्ध में ड्रोन युद्ध का ही बोलबाला रहेगा, तब हमारी सेना को कमजोर नहीं साबित होना चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पानी और मलबे ने 'लील' लिया पूरा गांव

● उत्तराखंड के धराली में 34 सेकेंड में सब कुछ ध्वस्त ● घर-होटल मलबे में दबे, 4 लोगों की मौत, 50 हैं लापता

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तराखंड के धराली में बादल फटने से खीर गंगा गांव बह गया है। घटना मंगलवार दोपहर 1.45 बजे की है। घटना के कई वीडियो और फोटोज सामने आए हैं। इनमें दिख रहा है कि पहाड़ी से बारिश का पानी और मलबा आया और 34 सेकेंड में पूरा गांव बहा ले गया। उत्तरकाशी के डीएम प्रशांत आर्या ने बताया कि अब तक 4 लोगों की मौत की खबर मिली है। 50 से ज्यादा लोग लापता हैं। कई लोगों के दबे होने की खबर है। धरावी गांव देहरादून से 218 किमी दूर है। गंगोत्री धाम से 18 किमी दूर है। रेस्क्यू टीम एनडीआरएफ, एसडीआरएफ के साथ आर्मी भी मौके पर पहुंच गई है। पानी का सैलाब देख लोग चीखने लगे पानी का सैलाब गांव की तरफ आते ही लोगों में चीख पुकार मच गई। कई होटलों में पानी और मलबा घुस गया है। धराली बाजार पूरी तरह तबाह हो गया है। कई होटल दुकानें ध्वस्त हो चुकी हैं। यहां पिछले 2 दिनों से भारी बारिश हो रही है। सीएम धामी ने कहा कि हम हालातों पर नजर बनाए हुए हैं। मौसम विभाग ने मंगलवार को केरल में भारी बारिश का रेड अलर्ट और हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, पुडुचेरी में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इनके अलावा मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब समेत 19 राज्यों में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है।

पानी का सैलाब देख चीखने लगे लोग

पानी का सैलाब गांव की तरफ आते ही लोगों में चीख पुकार मच गई। कई होटलों में पानी और मलबा घुस गया है। धराली बाजार पूरी तरह तबाह हो गया है। कई होटल दुकानें ध्वस्त हो चुकी हैं। यहां पिछले 2 दिनों से भारी बारिश हो रही है। सीएम धामी ने कहा कि हम हालातों पर नजर बनाए हुए हैं। देहरादून में सेना के जनसंपर्क अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल मनीष श्रीवास्तव ने कहा कि हर्षिल में बादल फटने और सेना के कैंप में नुकसान को लेकर कोई जानकारी नहीं है।

सेना ने संभाला मोर्चा

भारतीय सेना के सूर्य कमान की ओर से बताया गया कि हर्षिल के पास खीर गाड़ क्षेत्र में स्थित धाराली गांव में सोमवार को भारी भूस्खलन हुआ, जिससे मलबा और पानी अचानक गांव में बहने लगा। भारतीय सेना की 'आइबेक्स ब्रिगेड' के जवान तुरंत हरकत में आए और मौके पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया है। सेना की सूर्य कमान ने बताया कि सैनिक स्थिति का जायजा ले रहे हैं और प्रभावितों की सहायता कर रहे हैं।

मोहन कैबिनेट ने दी मंजूरी

मऊगंज और पांढुर्णा में सरकारी जमीन पर बनेंगे बीजेपी दफ्तर

जबलपुर में बनेगा 100 बिस्तर कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल

भोपाल (नप्र)। मोहन कैबिनेट ने प्रदेश के नवगठित जिलों मऊगंज और पांढुर्णा में बीजेपी कार्यालय बनाए जाने के लिए जमीन देने का फैसला किया है। इसके साथ ही सरकार ने जबलपुर के रांझी तहसील में 100 बिस्तर वाले कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अस्पताल के लिए पांच एकड़ जमीन देने का निर्णय लिया है। कैबिनेट ने मुरैना में 600 मेगावाट बिजली उत्पादन व भंडारण के मामले में सरकार की ओर से गारंटी दिए जाने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी है।

विधानसभा परिसर में मंगलवार को हुई मोहन कैबिनेट की बैठक में सात पुलिस कर्मचारियों और पेंशन संबंधी मामलों पर भी चर्चा के बाद उस पर प्रस्ताव के मुताबिक मंजूरी देने का फैसला किया है। कैबिनेट बैठक में मऊगंज और पांढुर्णा में बीजेपी दफ्तर के लिए सरकारी जमीन दिए जाने के राजस्व विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है।

कैबिनेट बैठक में मऊगंज और पांढुर्णा में बीजेपी दफ्तर के लिए सरकारी जमीन दिए जाने के राजस्व विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है।

कैबिनेट में इन प्रस्तावों पर चर्चा

कैबिनेट बैठक में मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना विकास योजना के चौथे चरण को सरकार ने मंजूरी दी गई है। साथ ही सहकारिता आयुक्त और पंजीयक सहकारी संस्थाएं भोपाल में पीएमयू सेल के गठन को लेकर चर्चा के बाद मंजूरी दी गई।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (श्रम और रोजगार मंत्रालय) भारत सरकार को 100 बिस्तर अस्पताल के लिए जबलपुर जिले के रांझी तहसील स्थित रिछाई गांव में 2.024 हेक्टेयर (पांच एकड़) जमीन देने के राजस्व विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। साथ ही भाजपा जिला कार्यालय के निर्माण के लिए मऊगंज जिला मुख्यालय में सरकारी जमीन के रकबा 29/12 में से 0.100 हेक्टेयर जमीन आवंटित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है।

सुप्रभात

किसी रात को
मेरी नींद अचानक उचट जाती है
आँख खुल जाती है
मैं सोचने लगता हूँ कि

जिन वैज्ञानिकों ने अणु अस्त्रों का
आविष्कार किया था
वे हिरोशिमा-नागासाकी के भीषण
नरसंहार के समाचार सुनकर
रात को कैसे सोए होंगे?
क्या उन्हें एक क्षण के लिए सही
ये अनुभूति नहीं हुई कि
उनके हाथों जो कुछ हुआ
अच्छा नहीं हुआ!

यदि हुई, तो वक्त उन्हें
कटघरे में खड़ा नहीं करेगा
किन्तु यदि नहीं हुई तो इतिहास उन्हें
कभी माफ़ नहीं करेगा!

- अटल बिहारी वाजपेयी

त्वरित टिप्पणी

डॉ. तेज प्रकाश पूर्णानंद व्यास
(पर्यावरण संरक्षक, जैव विविधता विशेषज्ञ)

प्रकृति का प्रतिशोध है धराली का भयावह हादसा

धराली गांव, उत्तरकाशी जिले में समुद्रतल से लगभग 8500 फीट की ऊँचाई पर स्थित एक सुंदर पहाड़ी बस्ती है, जो गंगोत्री धाम के मार्ग में खीरगंगा नदी के किनारे स्थित है। यह क्षेत्र हिमालय की नाजुक पारिस्थितिकी (fragile ecosystem) का हिस्सा है। हिमालय एक युवा पर्वत श्रृंखला है, जो निरंतर भूगर्भीय हलचलों (tectonic activities) से प्रभावित रहता है।

धराली के ऊपरी क्षेत्र में बहने वाली खीरगंगा नदी मानसूनी ऋतु में अत्यधिक जलधारण करती है।

जलवायु परिवर्तन के कारण इन दिनों बर्फ पिघलने और तीव्र वर्षा का चक्र बढ़ रहा है, जिससे आपदा की संभावना भी बढ़ गई है।

बादल फटना एक तीव्र वर्षा की घटना है, जिसमें कुछ ही घंटों में 100 मिमी से अधिक बारिश सीमित स्थान पर होती है। जब बादल अत्यधिक नमी लेकर पहाड़ों से टकराते हैं, तो जलवाष्प तीव्रता से वर्षा में बदल जाती है।

5 अगस्त को इस बादल फटने का प्रलंयकारी असर धराली में हुआ है। नदी के दोनों ओर घनी बस्ती है। हजारों टन मलबा बहा और ये पंक्तियां लिखे जाने तक 4 लोगों की मृत्यु और 50 लापता बताए जा रहे हैं। सेना राहत कार्य में द्रुत गति से कार्य कर रही है। उत्तरा खंड और भारत सरकार पूर्ण संवेदनशील है और राहतकारी कार्य में दबे हुए लोगों को निकालने का कार्य भी कर रही है।

बादल फटने को वैज्ञानिक भाषा में Orographic Lift and Saturation कहा जाता है। इन घटनाओं में Radar Doppler तकनीक से पूर्वानुमान संभव है, परंतु पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी सफलता सीमित है।

इस भयानक हादसे का मुख्यस कारण धराली में बह रही खीर गंगा नदी पर खीरगंगा तट पर होटल और होमस्टे भारी संख्या में अनियंत्रित निर्माण हैं, जो पारिस्थितिकी संतुलन के प्रतिकूल हैं। इनके अलावा बड़ी संख्या में वृक्षों की कटाईः बांध, सड़क, होटल आदि के लिए जंगलों की कटाई ने भूमि स्थिरता को कमजोर किया।

साथ ही जल निकासी प्रणाली की कमी से पानी सीधा आबादी में घुसा। मलबा, चट्टान और वृक्षों ने मात्र 10 मिनट में कहर ढा दिया। याद रहे कि केदारनाथ में भी ऐसा ही हादसा ग्लेशियर झील फटने के कारण हुआ था। तब भी विकास कार्यों में भूगर्भीय अध्ययनों की अनदेखी की गई थी। अब भी वही चूक दोहराई जा रही है।

समाधानः इस समस्या के दीर्घकालिक समाधान के लिए सरकार को कुछ आवश्यक कदम उठाने पड़ेंगे। ये हैं, 1. ईको सेंसेटिव जोन में निर्माण कार्य पर प्रतिबंध,2. Satellite-based early warning systems को मजबूत करना,3. सर्वेक्षण द्वारा Landslide Zonation Mapping, 4. (वनरोपण) और Catchment Area Treatment, 5. Tourism carrying capacity निर्धारित करना।

इसी के साथ ऐसे हादसों से बचने के लिए स्थानीय लोगो को भी कुछ उपाय करने होंगे। ये हैं- 1. तटों पर कंक्रीट निर्माण से परहेज, 2. स्थानीय भवन निर्माण तकनीक (e.g. लकड़ी-पत्थर मिश्रित निर्माण) को अपनाना।, 3. बिना प्लास्टिक और प्रदूषण पर्यटन क्षेत्र हो, 4. आपदा जागरूकता प्रशिक्षण (Mock drills), 5.. जलवायु परिवर्तन का योगदान IPCC रिपोर्ट के अनुसार, ग्लोबल वार्मिंग से हिमालयी क्षेत्र में, अत्यधिक वर्षा की घटनाएं 3 गुना बढ़ गई हैं। बर्फ पिघलने की गति 2 X तेज हो गई है। मानसून पैटर्न अस्थिर हो गया है। ऐसे में हम सबको जलवायु परिवर्तन को व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर गंभीरता से लेना होगा।

भविष्य में इस त्रासदी से बचने के लिए निम्न सुझाव विचारणीय हैं। निर्माण केवल भूगर्भीय सर्वे के बाद अनुमति,
जल-प्रबंधन नदियों के किनारे जल निकासी योजना
शिक्षा स्थानीयों के लिए आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण
पर्यावरण हरित क्षेत्र और जलधाराएं बचाना और
विज्ञान एआई आधारित warning systems का विकास।

धराली हादसे के वैज्ञानिक विश्लेषण का राष्ट्र धराली जैसी आपदाएं हमें बार-बार चेतावनी देती हैं कि हम प्रकृति से आगे नहीं निकल सकते। प्रगति जरूरी है, लेकिन प्रकृति की गोद में संतुलित विकास ही स्थायी समाधान है। अब भी समय है - विज्ञान, नीति और जनचेतना को एकजुट करके हम आपदाओं को रोक नहीं सकते, पर उनसे बच सकते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 6 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

12 खिलाड़ी विक्रम, 11 एकलव्य पुरस्कार से सम्मानित

खिलाड़ी वो जो जीवन जीने का उच्चतम मापदंड हासिल करे : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश शिखर खेल अलंकरण एवं 38वें नेशनल गेम्स 2025 के पदक विजेता खिलाड़ियों का सम्मान किया गया। मंगलवार को भोपाल के रविंद्र भवन में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खिलाड़ियों को सम्मानित किया।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि विश्वामित्र जी ने राजा दशरथ से राक्षसों को मारने के लिए युवा भगवान राम को मांगा था। अगर हम कल्पना करें कि वे भगवान को राक्षसों को मारने का टास्क नहीं देते तो उनका आगे का समय क्या होता है, मालूम नहीं। लेकिन, जंगल में जाने के बाद उन्होंने खिलाड़ी भावना के आधार पर अपने जीवन को पलट दिया। आगे भगवान राम ने पिनाक धनुष को तोड़ने का पराक्रम दिखाया। वह खिलाड़ी भावना ही थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खिलाड़ी का जीवन इसी प्रकार का होता है। उनका जीवन लोकतंत्र को गौरवांवित करता है। खेल हमें दुश्मनों से मुक्ति देता है। खिलाड़ी वो जो जीवन जीने का उच्चतम मापदंड हासिल करता है।इससे पहले मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि खेल के मायने में मध्यप्रदेश देश में नंबर 1 राज्य बनेगा।

12 खिलाड़ियों को विक्रम, 11 को एकलव्य पुरस्कार- खेल प्रशिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए इस वर्ष विश्वामित्र पुरस्कार से तीन अनुभवी कोचों को सम्मानित किया गया। इस समारोह में 38वें नेशनल गेम्स 2025 में मध्यप्रदेश के लिए पदक जीतने वाले 82 खिलाड़ियों को भी मंच से सम्मान मिलेगा। इनमें 34 स्वर्ण, 25 रजत और 23 कांस्य पदक विजेता शामिल हैं। इस साल 12 विक्रम, 11 एकलव्य, 3 विश्वामित्र और 1 लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार दिए गए।

12 खिलाड़ियों को विक्रम पुरस्कार- सीनियर खिलाड़ियों को दिया जाता है। इनमें ओलिंपिक, एशियन गेम्स और राष्ट्रीय खेलों के अलग-अलग वर्गों में प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी शामिल हैं। इसमें पुरस्कार राशि 2 लाख होती है। स्मृति चिन्ह भी दिया जाता है। 11 खिलाड़ियों को एकलव्य पुरस्कार- 21 वर्ष से कम उम्र के जूनियर खिलाड़ियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दिया जाता है। इसमें पुरस्कार राशि 1 लाख होती है। स्मृति चिन्ह भी दिया जाता है।

3 प्रशिक्षकों को विश्वामित्र पुरस्कार- समर्पित प्रशिक्षकों (कोच) को खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए दिया जाता है। इसमें भी पुरस्कार राशि 2 लाख होती है। स्मृति चिन्ह भी दिया जाता है।

1 को लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार- खेल में जीवन पर्यंत योगदान देने वाली हस्ती को दिया जाता है। इस वर्ष यह पुरस्कार उज्जैन के रतनलाल वर्मा (जिम्नास्टिक) को दिया जाएगा।

कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह के सवाल पर विधानसभा में आया जवाब

मप्र में 4 साल में 1054 करोड़ की साइबर ठगी

भोपाल (नप्र)। साइबर ठगों के निशाने पर लोगों के बैंक खाते और मोबाइल हैं। तमाम प्रकार के भय और लालच दिखाकर साइबर ठग लोगों के बैंक खातों से रकम उड़ा रहे हैं। लेकिन, मप्र पुलिस मात्र 1 करोड़ 90 लाख रुपए ही वापस दिला पाई है। कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह के सवाल के जवाब में गृह विभाग ने ये जवाब दिया है।

एक फीसदी राशि भी वापस नहीं दिला पाई पुलिस- एक मई 2021 से लेकर 13 जुलाई 2025 तक साइबर फ्रॉड के जरिए मप्र के अलग-अलग जिलों से करीब 1054 करोड़ रुपए की ठगी की गई है। गृह विभाग के मुताबिक इस दौरान करीब 105.21 करोड़ रुपए होल्ड होने की जानकारी भी मिली है। एनसीआरपी पोर्टल के मुताबिक 1 करोड़ 94 लाख रुपए ठगी के शिकार लोगों को वापस लौटाए गए हैं।

हर साल मिल रहीं 4 लाख से ज्यादा शिकायतें- विधानसभा में जो जानकारी दी गई उसमें बताया गया कि पुलिस विभाग के सीसीटीएनएस के डेटा के अनुसार पिछले 4 सालों में ईसीआईआर यानी एनफोर्समेंट केस इनफार्मेशन रिपोर्ट के दर्ज आंकड़ों को देखें तो 2023 को छोड़कर हर साल 4 लाख से ज्यादा ईसीआईआर दर्ज हो रहीं हैं।

1193 एफआईआर दर्ज हुई- 2020 से लेकर 15 जुलाई 2025 तक कुल 1193 एफआईआर दर्ज की गई हैं। इनमें से 585 मामलों में चालान पेश हुआ। 608 मामले अब भी लंबित हैं। वहीं, 579 मामलों में जांच जारी है। 166 मामलों को निरस्त किया गया।

नीट यूजी काउंसलिंग 2025 पर लग गई रोक

- फर्स्ट राउंड की चॉइस फिलिंग और लॉकिंग पर स्टे, जल्द जारी होंगी नई डेट्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेडिकल काउंसलिंग कमेटी यानी एमसीसी ने 5 अगस्त को नीट यूजी 2025 के फर्स्ट राउंड की चॉइस फिलिंग और चॉइस लॉकिंग फैसिलिटी को अस्थायी रूप से रोक दिया है। कमेटी ने इस

रोक के लिए कोई कारण नहीं बताया है। एमसीसी ने अपनी ऑफिशियल वेबसाइट पर लिखा है,फर्स्ट राउंड चॉइस फिलिंग और चॉइस लॉकिंग को रोक दिया गया है। रिवाइज्ड शेड्यूल जल्द ही घोषित किया जाएगा। एमसीसी ने नीट रजिस्ट्रेशन विंडो और चॉइस फिलिंग प्रोसेस शुरू की थी।

विपक्ष अपने पैर पर खुद कुल्हाड़ी मारने में माहिर

- मोदी बोले-ऑपरेशन सिंदूर पर बहस की मांग करके गलती की

एनडीए सांसदों की हुई बैठक, प्रधानमंत्री को सम्मानित किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली स्थित संसद भवन परिसर में मंगलवार को एनडीए संसदीय दल की बैठक हुई। इसमें एनडीए सांसदों ने ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव की सफलता पर पीएम नरेंद्र मोदी को सम्मानित किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पीएम को हार पहनाया। सांसदों ने हर-हर महादेव, भारत माता की जय के नारे लगाए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पीएम ने सांसदों को अपने संबोधन में कहा, संसद में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा की मांग करके विपक्ष ने गलती की। इसमें उनकी ही फजीहत

हुई। विपक्ष अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने में माहिर है। विपक्ष रोज ऐसी चर्चा कराए, हम इस फील्ड में माहिर हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, बिहार में वोटर्स लिस्ट रिविजन के मुद्दे पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। देश की जनता सब देख रही है।

पीएम ने अमित शाह की भी तारीफ की और कहा कि वे अब सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले केंद्रीय गृह मंत्री हैं।

जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक का निधन

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक का मंगलवार को लंबी बीमारी के बाद दिल्ली के राम

मनोहर लोहिया अस्पताल में निधन हो गया। उन्होंने दोपहर 1.12 बजे अंतिम सांस ली। सत्यपाल मलिक लंबे समय से किडनी की बीमारी से जूझ रहे थे। 11 मई को हालत ज्यादा बिगड़ने पर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वे जम्मू-कश्मीर, बिहार, गोवा और मेघालय के राज्यपाल रहे। 2018 में ओडिशा के राज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार भी संभाला।

बिहार सहित 4 राज्यों के राज्यपाल रहे, उनके कार्यकाल में हटा था आर्टिकल-370

सत्यपाल 23 अगस्त 2018 से 30 अक्टूबर 2019 तक जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल रहे। इन्हीं के कार्यकाल के दौरान ही आज ही के दिन 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 को हटाया गया था।

2258 दिनों से गृहमंत्री हैं शाह, बना दिया नया रिकॉर्ड

एलके आडवाणी को पीछे छोड़ा,पीएम मोदी ने की तारीफ, गृह के साथ सहकारिता भी संभाल रहे शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मंगलवार को नया रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज कर लिया है। वह इस पद पर सबसे लंबे समय तक रहने वाले नेता बन गए हैं। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय जनता पार्टी दिग्गज लालकृष्ण आडवाणी के रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। खास बात है कि उन्होंने यह उपलब्धि 5 अगस्त को हासिल की है। इसी दिन उन्होंने संसद में जम्मू और कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म करने का ऐलान किया था। अमित शाह भारत के गृहमंत्री पद पर 2 हजार 258 दिनों से हैं। उन्होंने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में 30 मई 2019 को यह पद पहली बार संभाला था। इसके बाद 2024 में एनडीए सरकार बनने के बाद भी वह इस पद पर काबिज हुए। इस पद पर आडवाणी के बाद कांग्रेस दिग्गज गोविंद वल्लभ पंत सबसे ज्यादा समय तक रहे हैं। एक ओर जहां आडवाणी ने 19 मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक कुल 2 हजार 256 दिन गृहमंत्री के तौर पर सेवाएं दीं। वहीं, पंत 10 जनवरी 1955 से 7 मार्च 1961 तक इस पद पर रहे। यानी कुल 6 साल 56 दिन तक वह गृहमंत्री रहे। खास बात है कि शाह देश के पहले सहकारिता मंत्री भी हैं। इससे पहले वह गुजरात के गृहमंत्री भी रह चुके हैं। मंगलवार को प्रधानमंत्री ने एनडीए सांसदों के साथ बैठक में गृह मंत्री अमित शाह की भी प्रशंसा करते हुए कहा कि वह अब सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले केंद्रीय गृह मंत्री बन गए हैं।

ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल का बड़ा ऑर्डर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों को भारी नुकसान पहुंचाया। भारतीय सेना अब भारत-रूस के ज्वाइंट वेंचर

ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों के लिए बड़ा ऑर्डर दे रही है। एएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक, रक्षा मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि जल्द ही हाई लेवल मीटिंग में भारतीय नौसेना के युद्धपोतों के लिए बड़ी संख्या में ब्रह्मोस मिसाइलों की खरीद को मंजूरी दी जा सकती है। साथ ही, भारतीय वायु सेना के लिए भी इन मिसाइलों के जमीनी और हवाई वैरिएंट खरीदे जाएंगे। पाकिस्तान के वायु ठिकानों और सेना के कैंपों पर हमले के लिए इन मिसाइलों का

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारतीय सेना की खास तैयारी

इस्तेमाल बड़े पैमाने पर किया गया। नौसेना इन मिसाइलों को अपने वीर-कैटेगरी के युद्धपोतों पर तैनात करने वाली है, जबकि वायु सेना इन्हें अपने रूसी मूल के सुखोई-30 लड़ाकू विमानों पर लगाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीते दिनों स्वदेशी हथियारों की तारीफ की थी।

महुआ का बचाव किया था, अब देश से माफी मांगता हूं

टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी ने वीडियो शेयर कर मांगी माफी

कोलकाता (एजेंसी)। ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस में आंतरिक कलह थमने का नाम नहीं ले रही है। अब सांसद कल्याण बनर्जी ने फिर से महुआ मोइत्रा पर हमला बोला है। उन्होंने संसद में उनका बचाव करने के लिए देश से माफी मांगी है। महुआ मोइत्रा पर जब पिछले कार्यकाल में पैसे लेकर गौतम अडानी से जुड़ा सवाल पूछने का आरोप लगा था और

उनकी संसद सदस्यता खत्म की गई थी तो जोर-शोर से कल्याण बनर्जी ने उनका बचाव किया था। अब उसी को लेकर कल्याण बनर्जी का कहना है कि मैं देश से माफी मांगता हूं कि मैंने महुआ मोइत्रा का बचाव किया था। कल्याण बनर्जी ने लोकसभा की कार्यवाही का वह वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें वह महुआ मोइत्रा का बचाव करते दिख रहे हैं। 8 मिनट के अपने भाषण में कल्याण बनर्जी ने महुआ मोइत्रा का जमकर बचाव किया था।

कौन है सच्चा भारतीय ! एससी तय नहीं करेगा

- सरकार से सवाल पूछना ही उनकी ड्यूटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने अपने भाई और नेता विपक्ष का बचाव करते हुए दो टूक कहा है कि कौन सच्चा भारतीय है। यह सुप्रीम कोर्ट तय नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि सरकार से सवाल पूछना राहुल गांधी की ड्यूटी है क्योंकि वह लोकसभा में नेता विपक्ष हैं। प्रियंका

गांधी का यह बयान सुप्रीम कोर्ट की उस टिप्पणी के बाद आई है, जिसमें अदालत ने कहा था कि कोई भी सच्चा भारतीय ऐसी बातें नहीं कर सकता। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने कहा,माननीय न्यायाधीशों के प्रति पूरा सम्मान रखते हुए मैं ये कहना चाहती हूं कि वो यह तय नहीं कर सकते कि सच्चा भारतीय कौन है। सरकार से सवाल पूछना विपक्ष के नेता का कर्तव्य है। मेरा भाई कभी भी सेना के खिलाफ नहीं बोलेगा, वह उनके प्रति उच्च सम्मान रखता है। इसका गलत मतलब निकाला गया है।

झारखंड के पूर्व सीएम शिबू सोरेन का अंतिम संस्कार

पैतृक गांव में दाह-संस्कार,विधानसभा में दी गई श्रद्धांजलि

रांची (एजेंसी)। झारखंड के पूर्व सीएम शिबू सोरेन का आज यानी मंगलवार को उनके पैतृक गांव नेमरा (रामगढ़) में अंतिम संस्कार किया जाएगा।

उनका पार्थिव शरीर गांव पहुंच चुका है और घाट पर ले जाया जा रहा है। उनके छोटे बेटे बसंत सोरेन मुखाग्नि देंगे। रांची से रामगढ़ जाने के दौरान कई जगह लोगों ने श्रद्धांजलि दी। सड़क किनारे समर्थक खड़े दिखे और शिबू सोरेन अमर रहे के नारे लगाते

नजर आए। इससे पहले मंगलवार सुबह बड़ी संख्या में लोगों ने मोरहाबादी स्थित उनके आवास पर गुरुजी के अंतिम दर्शन किए और श्रद्धांजलि दी। शिबू सोरेन के करीबियों में गिने जाने वाले पूर्व सीएम चंपाई सोरेन भी श्रद्धांजलि देने पहुंचे। इसके साथ ही पूर्णिया सांसद पप्पू यादव, आप सांसद संजय सिंह अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए रांची पहुंचे। फिर पार्थिव शरीर उनके आवास से विधानसभा पहुंचा।

बिहार चुनाव के पहले नीतिश सरकार का फिर बड़ा तोहफा

- अब शारीरिक शिक्षकों और रसोइयों को किया मालामाल

पटना (एजेंसी)। बिहार सरकार ने प्रदेश के मध्य विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य अनुदेशकों (अंशकालिक) के मानदेय में वृद्धि कर दी है। बिहार मंत्रिमंडल की मंगलवार को हुई बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में कुल 36 प्रस्तावों की स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में मध्य विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य अनुदेशकों (अंशकालिक) के मानदेय को 8000 रुपये प्रतिमाह मानदेय और 200 रुपये प्रतिवर्ष वार्षिक वेतन वृद्धि में बढ़ोत्तरी करते हुए एक अगस्त से कुल मानदेय 16000 रुपये और वार्षिक वेतन वृद्धि 400 रुपये की दर से भुगतान की स्वीकृति प्रदान की गई है।

1971 के अखबार से भारतीय सेना का अमेरिका पर निशाना

कहा-अमेरिका ने युद्ध के लिए पाकिस्तान को दिए थे काफी हथियार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने मंगलवार को 1971 के एक अखबार की कटिंग शेयर कर अमेरिका पर निशाना साधा है। इसमें दिखाया गया है कि 1971 के युद्ध की तैयारी में अमेरिका पाकिस्तान को हथियार दे रहा था। सेना की ईस्टर्न कमान ने एक्स पोस्ट में लिखा- इस दिन, उस साल, युद्ध की तैयारी 05 अगस्त 1971, फैक्ट जानें।

U.S. Arms Worth $2 Billion Shipped To Pakistan Since '54

1954 से अब तक (1971) पाकिस्तान को 2 अरब डॉलर के अमेरिकी हथियार भेजे गए। इंडियन आर्मी का ये पोस्ट अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की भारत पर ज्यादा टैरिफ लगाने की धमकी के एक दिन बाद आया है। ट्रम्प ने सोमवार को कहा था- भारत रूस से सस्ता तेल खरीदकर उसे खुले बाजार में मुनाफे के साथ बेच रहा है। मैं भारत पर लगने वाले टैरिफ में भारी इजाफा करूंगा। रिपोर्ट में उस समय के मंत्री वीसी शुक्ला का बयान है।

बाबा बटेश्वर-माता गोरा का नौका विहार

ज्योतिर्लिंगों का रुद्राभिषेक, भोपाल में शिवभक्ति की अनुपम छटा

भोपाल (नप्र)। श्रावण मास के पावन अवसर पर राजधानी भोपाल शिवमय हो उठी। पुराने शहर के प्राचीन श्री बड़वाले महादेव मंदिर और तुलसी नगर स्थित आरोग्य भारती सभागार में भगवान शिव की भक्ति में डूबे दो भव्य आयोजनों ने श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति और भक्ति रस से सराबोर कर दिया।

श्री बड़वाले महादेव मंदिर में श्रावण के चतुर्थ सोमवार पर मंदिर परिसर को आकर्षक पुष्प-वाटिका के रूप में सजाया गया। यहां

बाबा बटेश्वर और माता गोरा को मंदिर के गर्भगृह में बनाए गए प्रतीकात्मक नील सरोवर में नौका विहार कराया गया।

समिति के संजय अग्रवाल और प्रमोद नेमा ने बताया कि दिन की शुरुआत रुद्राभिषेक और अभिषेक पूजन से हुई, जबकि रात्रि 9 बजे महाआरती और भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस आरती का सोशल मीडिया पर सीधा प्रसारण किया गया, जिसे देश-विदेश से हजारों श्रद्धालुओं ने देखा। समिति सदस्य प्रकाश मालवीय ने बताया कि नौका विहार के दृश्य के लिए श्रद्धालुओं की देर रात तक लंबी कतारें लगी रहीं।

इधर, सिद्धि ज्योतिष परामर्श केन्द्र द्वारा तुलसी नगर स्थित आरोग्य भारती सभागार में द्वादश ज्योतिर्लिंगों के रुद्राभिषेक का दिव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में भोपाल समेत विभिन्न शहरों से 140 से अधिक श्रद्धालु सपरिवार शामिल हुए, जबकि विदेशों में बसे शिवभक्तों ने गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन भागीदारी की।

कार्यक्रम के मुख्य आचार्य पं. (डॉ.) राजेश कुमार मिश्र ने बताया कि यह आयोजन वर्ष 2009 से लगातार श्रावण मास में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि द्वादश ज्योतिर्लिंगों का रुद्राभिषेक मानसिक, शारीरिक और आत्मिक शांति प्रदान करता है। आयोजन के संयोजक पं. (डॉ.) अभय शंकर मिश्र और सहयोगी आचार्य पं. पुरुषोत्तम तिवारी ने पूरे कार्यक्रम को धार्मिक गरिमा और विधि-विधान से संपन्न कराया।

भोपाल में जल भराव की समस्या से रहवासी परेशान

अमलतास स्वर्ण कुंज कॉलोनी की सड़कें डूबी, बीमारी और हादसे का बढ़ा खतरा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कटारा हिल्स के अमलतास स्वर्ण कुंज कॉलोनी के लोग जलभराव से परेशान है। कॉलोनी की मुख्य सड़कों पर पानी भरा है, जिससे रहवासियों का आने जाने में दिक्कत हो रही है। वहीं खुले पावर सप्लाई बोर्डों से गंभीर हादसे का खतरा भी मंडरा रहा है।

सोशल मीडिया पर भी उठी आवाज- भोपाल युवा कांग्रेस के जिला महासचिव अनिकेत द्विवेदी ने 2 अगस्त को रहवासियों को होने वाली परेशानी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया। लेकिन अब तक कोई भी जिम्मेदार अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचे है।

विधायक, महापौर और कलेक्टर को दिए गए ज्ञापन

स्थानीय रहवासियों ने बताया कि इस समस्या को लेकर वे विधायक, महापौर, कलेक्टर और नगर निगम कमिश्नर तक को कई बार ज्ञापन सौंप चुके हैं। बावजूद इसके सरकारी तंत्र उदासीन बना हुआ है। वहीं लोगों ने बताया कि लगातार हो रहे जलभराव के कारण मलेरिया, पीलिया और निमोनिया जैसी बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ सकता है। कॉलोनी के बोरवेलों का भूजल भी दूषित हो चुका है। जिससे लोगों को पीने के पानी के लिए भी परेशान होना पड़ रहा है।

रहवासियों की मांग समस्या का समाधान हो- यहां रहने वाले लोगों का सवाल है कि अगर जलभराव के कारण करंट फैलने से कोई जानलेवा हादसा हो जाए, तो उसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? वहीं लोगों ने जल्द से जल्द जलभराव समस्या के समाधान की मांग की है।

सीएम डॉ. मोहन यादव पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री द्वारका प्रसाद मिश्र की जन्म जयंती पर पुष्पांजलि कार्यक्रम में शामिल हुए। विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर भी उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल की अध्यक्षता में 'मुख्यमंत्री दुधारू पशु प्रदाय योजना' की बैठक राजभवन में हुई। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल उपस्थित थे।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने राजभवन में सौजन्य भेंट की।

एफपीओ किसानों से फसल खरीदने तक ही सीमित न रहें, उत्पाद की प्रोसेसिंग कर लाभ भी अर्जित करें : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

किसान एफपीओ के माध्यम से अपने उत्पादों का बढ़ाएं दायरा

मुख्यमंत्री को स्व-सहायता समूह की बहनों ने बांधीं बांस से बनी राखियां

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 'एफ.पी.ओ. डायरेक्टर समिट-2025' में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार किसानों की आय बढ़ाकर स्वर्णिम मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए संकल्पित है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत@2047 के संकल्प में मध्यप्रदेश की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इसी लक्ष्य की पूर्ति और प्रदेश के विकास के लिए राज्य सरकार ने सभी क्षेत्रों में कार्य प्रारंभ किए हैं। प्रदेश के औद्योगिकीकरण में फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़कर लगभग 55 लाख हेक्टेयर हो गया है। किसानों को बिजली बिल से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से सिंचाई के लिए 32 लाख सोलर पंप बांटने का कार्य प्रारंभ हो चुका है। प्रदेश में खेती का दायरा लगातार बढ़ रहा है। राज्य की कृषि उत्पादकता अच्छी है और अब हम फूड प्रोसेसिंग में अग्रणी राज्य बनने की ओर अग्रसर हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) केवल किसानों से फसल खरीदने तक सीमित न रहें, बल्कि अनाज और अन्य उत्पादों की प्रोसेसिंग कर उसे बाजार में बेचें, जिससे एफपीओ से जुड़े किसान सदस्यों को सीधे तौर पर लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्था में 'समृद्ध एफपीओ-आत्मनिर्भर किसान-विकसित भारत' संकल्प के अंतर्गत एफपीओ फेडरेशन मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित 'एफ.पी.ओ. डायरेक्टर समिट-2025' को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में रतलाम जिले से आई स्व-सहायता समूह की बहनों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव की कलाई पर बांस से बनी राखियां बांधीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में आए किसानों को स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी और श्री बलराम जयंती की शुभकामनाएं दीं।

फूड प्रोसेसिंग को 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 95 प्रतिशत करने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार ने फूड प्रोसेसिंग को 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 95 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ किसानों को फूड प्रोसेसिंग से जोड़ा जा रहा है। मालवा अंचल में आलू चिप्स निर्माण के लिए बड़ा उद्योग स्थापित किया जा रहा है। प्रदेश के औद्योगिकरण में एफपीओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। एफपीओ केवल फूड प्रोसेसिंग ही न करें, बल्कि वेयर हाउसिंग और लॉजिस्टिक्स में भी योगदान दें। एफपीओ के माध्यम से किसान अपने उत्पादों का दायरा बढ़ाएं।

- **किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार किसान संगठनों का सहयोग लेगी-** मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए गतिविधियों के संचालन में राज्य सरकार, भारतीय किसान संघ और मालवम फेडरेशन जैसे संगठनों की सहायता लेगी। राज्य सरकार ने किसानों को गेहूं का प्रति क्विंटल दाम 2600 रुपए कर दिया है। तुअर दाल पर टैक्स हटाया है। किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर मोटा अनाज (कोदो-कुटकी) खरीदने की भी व्यवस्था की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दूध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का लक्ष्य है। राज्य सरकार ने पशुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना शुरू की है।
- **प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा-** भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के.साई रेड्डी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा। हमारा लक्ष्य भारत को विश्व की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था बनाना है। एफपीओ पांडवों की तरह मिलकर चलें, तो निश्चित रूप से प्रगति करेंगे। हम देश के 1 लाख गांवों तक जाने के लिए प्रयासरत हैं। भारतीय किसान संघ गांव और किसानों की उन्नति के लिए कार्य कर रहा है।
- **एफपीओ को फसल और उत्पादों की मार्केटिंग के लिए निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता-** भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री दिनेश कुलकर्णी ने कहा कि भगवान श्री बलराम को आदर्श मानकर हम किसानों को समृद्ध बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। विकसित भारत का सपना, सबका साथ सबके विकास से ही पूर्ण होगा। किसानों को समृद्ध करना होगा, जिसमें एफपीओ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। केंद्र सरकार ने देश के सभी एफपीओ को आगे बढ़ाने की योजना बनाई है। एफपीओ को फसल और उत्पादों की मार्केटिंग के लिए निरंतर प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है।

प्रदेश में खाद की कोई कमी नहीं है: मंत्री श्री कंषाना

कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा कि मध्य प्रदेश कृषि प्रधान राज्य है। जब प्रदेश का किसान समृद्ध होगा, तो देश समृद्ध होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में किसानों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। प्रदेश में खाद की कोई कमी नहीं है। पर्याप्त मात्रा में यूरिया उपलब्ध है, लेकिन डीएपी की थोड़ी कमी है, जिसकी व्यवस्था की जा रही है। प्रदेश में 14 लाख मैट्रिक टन यूरिया और 12 लाख मैट्रिक टन डीएपी उपलब्ध है। सरकार 10 लाख मैट्रिक टन यूरिया किसानों को बांट चुकी है। किसानों पर भगवान श्रीराम की कृपा है। प्रदेश में पर्याप्त वर्षा हो रही है।

ड्रग पार्टी के लिए 25 हजार तक वसूलता था यासीन

पब-क्लब में प्लानिंग के बाद फार्म हाउस पर होती थी पार्टी; होटल में युवती से किया रेप

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हाई प्रोफाइल ड्रग तस्करी के मामले में गिरफ्तार डीजे यासीन उर्फ मछली शहर में सबसे ज्यादा नाइट पार्टी ऑर्गेनाइज करता था। वह क्लब, लाउंज और पब में नशे के आदी युवक-युवतियों के साथ पार्टी की प्लानिंग करता था। इसके बाद शहर के आउटर में बने फार्म हाउस में पार्टी ऑर्गेनाइज होती थी। जहां सिर्फ पास धारकों को ही एंट्री दी जाती थी।

खास बात यह है कि इन पार्टी में एंट्री के लिए 10 से 25 हजार रुपए तक की वसूली की जाती थी। जबकि ड्रग के लिए अलग से रकम ऐंठी जाती थी। खुद यासीन ने रिमांड पर रहने के दौरान क्राइम ब्रांच की पूछताछ में इन तमाम बातों का खुलासा किया है। उसके मोबाइल से पुलिस को कई रेव पार्टीज के भी वीडियो मिले हैं।

शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि हर पार्टी से पहले यासीन के बताए पब में

पार्टी में शामिल होने वाले लोग एकत्र होते थे। बाद में एक साथ वेन्यू के लिए रवाना होते थे। वेन्यू शहर के आउटर में बने फार्म हाउस में होते हैं। जहां रात भर लाउड म्यूजिक के साथ डांस मस्ती और धमाल करने पर भी इन लोगों की शिकायत नहीं की जाती थी। क्योंकि पार्टी के लिए ऐसे फार्म को चुना जाता था, जो आबादी से दूर हों।

पब-क्लब मैनेजरों और मालिकों को नोटिस जारी- क्राइम ब्रांच शहर के उन तमाम क्लब-पब और लाउंज मालिक और मैनेजरों को नोटिस जारी कर रही है, जहां यासीन और उसके गिरोह के लोगों का बैठना उठना था। जिससे यह साफ हो सके कि ड्रग तस्कर गिरोह की मिलीभगत क्लब, पब मालिक या स्टाफ से तो नहीं है।

पब में मिली युवती से रेप कर चुका यासीन- एमपी नगर थाने की सब इंस्पेक्टर अर्चना तिवारी के मुताबिक 29 वर्षीय युवती प्राइवेट जॉब करती है। करीब एक साल पहले उसकी मुलाकात ड्रग तस्कर यासीन से एक पब में हुई थी। दोनों की बातचीत के बाद एक-दूसरे से दोस्ती हो गई थी। दोनों ने मोबाइल नंबर शेयर किए थे।

बाद में आरोपी यासीन ने युवती को मिलने के लिए एक फाइव स्टार होटल में बुलाया, जहां उसने शादी करने का झांसा देकर उसके साथ रेप किया। उसके बाद से वह लगातार युवती का शोषण कर रहा था।

यासीन को अरेरा हिल्स पुलिस ने लिया रिमांड पर- यासीन को अरेरा हिल्स थाना पुलिस ने प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया है। 4 अगस्त को उसे कोर्ट में पेश कर एक दिन की रिमांड पर लिया गया है।

आपदा प्रबंधन को छोड़ अन्य काम नहीं करेंगे तहसीलदार

भोपाल (नप्र)। राजस्व अधिकारियों के न्यायिक और गैर न्यायिक विभाजन का बुधवार से फिर विरोध होगा। तहसीलदार और नायब तहसीलदार आपदा प्रबंधन को छोड़ अन्य कोई काम नहीं करेंगे। हालांकि, वे अभी सामूहिक हड़ताल नहीं करेंगे और न ही मुख्यालय छोड़ेंगे।

भोपाल में भी इसका विरोध होगा, जिससे आमजनों के कामकाज पर असर पड़ सकता है। वर्तमान में सभी तहसील- बैरागढ़, कोलार, एमपी नगर, शहर वृत्त, बैरसिया और टीटी नगर में तहसीलदार और नायब तहसीलदारों को न्यायिक और गैर न्यायिक कार्य में विभाजित किया गया है। यानी, जो अधिकारी न्यायिक कार्य कर रहे हैं, वे फिल्ड में नहीं है। वहीं, फिल्ड वाले अधिकारी न्यायिक कार्य नहीं कर रहे।

मंत्री-अफसरों को सुना चुके बात- इस संबंध में मध्यप्रदेश राजस्व अधिकारी (कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा) संघ राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा और सीनियर अधिकारियों के सामने अपनी बात रख चुका है।

भोपाल से 57 किमी दूर मिली तीन साल की मासूम

गांधी नगर इलाके से हुई थी लापता, अगले दिन कुरावर में मिली

भोपाल (नप्र)। गांधी नगर थाना क्षेत्र से लापता हुई तीन साल की मासूम रागिनी को पुलिस ने 24 घंटे बाद राजगढ़ जिले के कुरावर कस्बे से बरामद कर लिया है। बच्ची 4 अगस्त को दोपहर 3 बजे घर के बाहर खेलते वक्त अचानक गायब हो गई थी। सूचना मिलते ही गांधी नगर पुलिस ने तत्काल गुमशुदगी दर्ज कर तलाश शुरू की। 5 अगस्त की सुबह बच्ची कुरावर में लावारिस हालत में मिली। वहां की पुलिस ने तत्काल गांधी नगर पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद बच्ची को भोपाल लाया गया। बच्ची को फिलहाल मेडिकल जांच के लिए भेजा गया है।

गांधी नगर थाना प्रभारी बृजेंद्र मर्सकोले ने बताया कि बच्ची सुरक्षित मिल गई है, लेकिन वह अभी कुछ भी स्पष्ट रूप से नहीं बता पा रही है। पुलिस उससे बातचीत कर यह जानने की कोशिश कर रही है कि वह कुरावर कैसे पहुंची, क्या किसी बस, ऑटो या किसी अन्य वाहन से गई थी। जानकारी के अनुसार, रागिनी की मां का निधन हो चुका है और पिता लंबे समय से बीमार रहते हैं। बच्ची की परवरिश उसके ताऊ कर रहे हैं। कुछ समय पहले भी यह बच्ची गुम हो चुकी है और तब श्यामला हिल्स इलाके से बरामद हुई थी।

शादी से मना किया तो कुल्हाड़ी से हत्या

नाबालिग से छेड़छाड़ करता था आरोपी, दो दिन पहले जान से मारने धमकाया था

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक युवक ने 17 साल की लड़की की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी। नाबालिग मंगलवार सुबह करीब 4 बजे घर से बाहर निकली थी। पास ही छिपा हुआ आरोपी आया और उसने कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। नाबालिग की चीख सुनकर माता-पिता पहुंचे तो वह खून से लथपथ पड़ी थी। आरोपी फरार हो चुका था। अस्पताल पहुंचाने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना पाटन क्षेत्र के ग्राम सकरा की है। नाबालिग सरकारी स्कूल में 11वीं में पढ़ रही थी। गांव का ही रहने वाला 22 साल राकेश कुमार प्राइवेट जॉब करता है। जानकारी के मुताबिक वह छात्रा से छेड़छाड़ करता था। उस पर शादी के लिए दबाव बना रहा था।

कंटेनर की टक्कर से प्रधान आरक्षक की मौत

सिर, पैर और सीने में आईं गंभीर चोटें, निजी अस्पताल में चल रहा था इलाज

भोपाल (नप्र)। ईंटखेड़ी थाना क्षेत्र में 17 जुलाई की सुबह ड्यूटी के दौरान तेज रफ्तार कंटेनर की टक्कर में गंभीर रूप से घायल हुए प्रधान आरक्षक गोविंद पटेल का सोमवार देर रात नर्मदा अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वे करीब 50 वर्ष के थे और भोपाल के संजीव नगर इलाके में रहते थे। उनका पोस्टमॉर्टम हमीदिया अस्पताल की मर्चुरी में कराया गया। इस दौरान परिजन सहित पुलिस के कई अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

हादसे के बाद से ही हालत थी नाजुक- गौरतलब है कि 17 जुलाई की सुबह करीब 3:15 बजे लांबाखेड़ा बायपास स्थित चौरसिया ढाबे के पास गश्त कर रहे प्रधान आरक्षक गोविंद पटेल की बाइक को तेज रफ्तार कंटेनर ने टक्कर मार दी थी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि गोविंद पटेल करीब 20 मीटर तक कंटेनर के साथ घिसटाते चले गए थे। हादसे में उनका बांया पैर बुरी तरह कुचल गया था और सिर व सीने में भी गंभीर चोटें आई थीं।

संपादकीय

भारत का ट्रंप को सही जवाब

और ज्यादा टैरिफ लगाने को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की धमकी का भारत ने देर से ही सही सटीक और संयत जवाब दिया है। भारत ने कहा कि हमें रूस से कच्चा तेल खरीदने पर आपत्ति करने वाला अमेरिका पहले खुद अपने गिरेबान में झांके। इसके पूर्व डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा, 'भारत को परवाह नहीं है कि रूस की युद्ध मशीन से यूक्रेन में कितने लोग मारे जा रहे हैं। इसलिए, मैं भारत पर टैरिफ़ को बढ़ाने जा रहा हूं।' ट्रंप ने यह भी लिखा कि भारत न सिर्फ़ रूस से बड़ी मात्रा में तेल ख़रीद रहा है, बल्कि ख़रीदे गए इस तेल का एक बड़ा हिस्सा खुले बाज़ार में बेचकर भारी मुनाफ़ा भी कमा रहा है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं कि यूक्रेन में रूस की युद्ध मशीन कितने लोगों को मार रही है। इसी कारण, मैं भारत पर टैरिफ़ को बढ़ाने जा रहा हूं। इससे पहले 30 जुलाई को भी ट्रंप ने भारत पर 25 फ़ीसदी टैरिफ़ और रूस से तेल खरीद जारी रखने पर अतिरिक्त जुर्माना लगाने की घोषणा की थी। अपने जवाब में भारत ने ट्रंप की इस धमकी को 'अनुचित और तर्कहीन' बताया। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि 'अमेरिका अब भी रूस से अपनी परमाणु उद्योग के लिए यूरेनियम हेक्साफ्लोराइड, इलेक्ट्रिक वाहन इंडस्ट्री के लिए पैलेडियम, उर्वरक और रसायन आयात करता है।' भारत विदेश मंत्रालय ने ट्रंप की आलोचना को ख़ारिज करते हुए कहा कि अमेरिका और यूरोपीय संघ खुद रूस के साथ व्यापार जारी रखे हुए हैं। पिछले साल अमेरिका ने कड़े प्रतिबंधों के बावजूद रूस के साथ अनुमानित 3.5 अरब डॉलर का माल व्यापार किया। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि यूक्रेन संघर्ष शुरू होने के बाद अमेरिका और यूरोपीय संघ भारत को रूस से तेल खरीदने के लिए निशाना बना रहे हैं। दरअसल, भारत ने रूस से तेल आयात तब शुरू किया जब पारंपरिक तेल आपूर्तियां यूरोप की ओर मोड़ दी गई थीं। विदेश मंत्रालय ने कहा कि वास्तव में भारत ने रूस से तेल इसलिए आयात शुरू किया, क्योंकि संघर्ष के बाद पारंपरिक सप्लाई यूरोप की ओर मोड़ दी गई थी। उस समय अमेरिका ने खुद भारत को ऐसे आयात के लिए प्रोत्साहित किया था ताकि दुनिया के तेल बाज़ार की स्थिरता मज़बूत बनी रह सके। भारत अपने उपभोक्ताओं के लिए सस्ती और स्थिर ऊर्जा मुहैया कराने के लिए आयात करता है। यह वैश्विक बाज़ार के हालात की मजबूरी है। भारत ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि किसी भी बड़ी अर्थव्यवस्था की तरह भारत अपने राष्ट्रीय हित और आर्थिक सुरक्षा की रक्षा के लिए सभी ज़रूरी क़दम उठाएगा। यह सही है कि भारत फिलहाल रूसी तेल के सबसे बड़े ख़रीदारों में शामिल है। 2022 में रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद कई यूरोपीय देशों ने व्यापार घटाया, जिसके बाद भारत रूस के लिए एक अहम बाज़ार बन गया। इसी संदर्भ में रक्षा विशेषज्ञ ब्रह्म चेलानी के अनुसार ध्यान देने वाली बात यह है कि पश्चिमी देश भारत की रूस से तेल खरीदने के लिए आलोचना करते हैं, जबकि वे खुद अपने व्यापार के ज़रिए रूस को कहीं ज़्यादा पैसा भेजते हैं। यह और भी विडंबनापूर्ण है क्योंकि पश्चिमी गुट यूक्रेन में रूस के ख़िलाफ़ एक प्रॉक्सी वॉर लड़ रहा है। दरअसल ट्रंप भारत की गर्दन दबोचकर यूक्रेन रूस युद्ध रोकना चाहते हैं तो यह नामुमकिन है। वो एक भी ऐसा काम नहीं कर रहे जिससे भारत को भरोसा हो कि वो हमारे दुश्मन नहीं दोस्त हैं।

भारत ने नहीं झुकाया सिर, दिया करारा जवाब

नजरिया

अजय कुमार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ट्रंप की बयानबाजी में एक साफ विरोधाभास नजर आता है। एक तरफ वह भारत को 'महान मित्र' और 'महान देश' कहते हैं, दूसरी तरफ 25 प्रतिशत रेसिप्रोकल टैरिफ और रूस से व्यापार के लिए जुर्माने की धमकी देते हैं। उनकी हताशा का कारण यह है कि भारत उनके दबाव में झुकने को तैयार नहीं है। ट्रंप को लगता है कि जिस भारत को कभी अमेरिका सड़ा हुआ गेहूं भेजता था, वह आज उनकी धमकियों का जवाब देना भी जरूरी नहीं समझता। उनकी चिढ़ का अंदाजा उनके बयानों से लगाया जा सकता है। कभी वह भारत की अर्थव्यवस्था को 'मृतप्राय' कहते हैं, तो कभी पाकिस्तान के साथ तेल सौदों की बात कर भारत को अपमानित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि पाकिस्तान के पास तेल है ही नहीं, और ट्रंप का यह बयान उनकी हताशा का प्रतीक है। वह भारत को डराने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन भारत की रणनीतिक और आर्थिक ताकत के सामने उनकी एक नहीं चल रही।

डोनाल्ड ट्रंप की भारत के प्रति बढ़ती चिढ़ और अमेरिका की दोहरी नीति ने वैश्विक मंच पर एक नया विवाद खड़ा कर दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप भारत को बार-बार टैरिफ और जुर्माने की धमकियां दे रहे हैं, खासकर रूस से तेल और हथियारों के व्यापार को लेकर। लेकिन भारत ने न केवल इन धमकियों को नजरअंदाज किया, बल्कि अमेरिका और यूरोपीय संघ की दोहरी नीतियों को उजागर कर जवाबी रुख अपनाया है। भारत का स्पष्ट कहना है कि जब अमेरिका और यूरोप स्वयं रूस से भारी मात्रा में सामान आयात कर रहे हैं, तो भारत पर रूस के साथ व्यापार को लेकर उंगली उठाना अनुचित और अतार्किक है। यह स्थिति वैश्विक भूराजनीति में दोहरे मानदंडों को उजागर करती है, जहां अमेरिका भारत को दबाव में लाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन खुद अपनी जरूरतों के लिए रूस से व्यापार जारी रखे हुए है।

ट्रंप की बयानबाजी में एक साफ विरोधाभास नजर आता है। एक तरफ वह भारत को 'महान मित्र' और 'महान देश' कहते हैं, दूसरी तरफ 25त्न रेसिप्रोकल टैरिफ और रूस से व्यापार के लिए जुर्माने की धमकी देते हैं। उनकी हताशा का कारण यह है कि भारत उनके दबाव में झुकने को तैयार नहीं है। ट्रंप को लगता है कि जिस भारत को कभी अमेरिका सड़ा हुआ गेहूं भेजता था, वह आज उनकी धमकियों का जवाब देना भी जरूरी नहीं समझता। उनकी चिढ़ का अंदाजा उनके बयानों से लगाया जा सकता है। कभी वह भारत की अर्थव्यवस्था को 'मृतप्राय' कहते हैं, तो कभी पाकिस्तान के साथ तेल सौदों की बात कर भारत को अपमानित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि पाकिस्तान के पास तेल है ही नहीं, और ट्रंप का यह बयान उनकी हताशा का प्रतीक है। वह भारत को डराने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन भारत की रणनीतिक और आर्थिक ताकत के सामने उनकी एक नहीं चल रही।

भारत ने ट्रंप की धमकियों का जवाब न केवल कूटनीतिक रूप से दिया, बल्कि तथ्यों के साथ अमेरिका को आइना भी दिखाया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने साफ कहा कि भारत पर रूस से तेल आयात को लेकर की जा रही आलोचना बेबुनियाद है। भारत ने बताया कि अमेरिका स्वयं रूस से यूरेनियम हेक्साफ्लोराइड, पैलेडियम, खाद, और रसायन जैसे सामान आयात करता है, जो उसकी परमाणु, इलेक्ट्रॉनिक वाहन, और कृषि उद्योगों के लिए जरूरी हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी से मई 2025 तक अमेरिका ने रूस से 2.1 बिलियन डॉलर का आयात किया, जो पिछले साल की तुलना में 23 प्रतिशत अधिक है। इसमें पैलेडियम (37 प्रतिशत), यूरेनियम (28 प्रतिशत), और उर्वरक (21 प्रतिशत) का आयात प्रमुख है। यह आंकड़े साफ बताते हैं कि अमेरिका ने यूक्रेन युद्ध के बावजूद रूस के साथ व्यापार जारी रखा है। 2021 में अमेरिका ने रूस से 17 अरब डॉलर का कच्चा तेल आयात किया था, और 2024 में भी उसने उर्वरक (1.1 बिलियन डॉलर),

पैलेडियम (878 मिलियन डॉलर), और यूरेनियम (624 मिलियन डॉलर) जैसे सामानों का आयात किया।

यूरोपीय संघ भी इस मामले में पीछे नहीं है। वह भारत को रूस से तेल आयात न करने की सलाह देता है, लेकिन स्वयं रूस से ईंधन, लोहा, स्टील, रसायन, और उर्वरक जैसे सामान आयात करता है। 2024 में यूरोपीय संघ ने रूस से 35.9 अरब यूरो का आयात किया, जिसमें 22.3 अरब यूरो का ईंधन प्रमुख था। यह राशि भारतीय रुपये में 3617 करोड़ से अधिक है। भारत का तर्क है कि जब अमेरिका और यूरोप अपनी जरूरतों के लिए रूस से व्यापार कर रहे हैं, तो भारत पर दबाव डालना दोहरा मापदंड है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए रूस से 35-40 प्रतिशत तेल आयात करता है, जो आर्थिक रूप से फायदेमंद है।

भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और आर्थिक ताकत ट्रंप की चिढ़ का प्रमुख कारण है। भारत ने न केवल रूस के साथ व्यापार जारी रखा, बल्कि अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते (BTA) पर जोर दिया, जो दोनों देशों के हितों को संतुलित करे। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत जवाबी टैरिफ के बजाय बातचीत से समाधान चाहता है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी स्पष्ट किया कि भारत ट्रंप के दबाव के बावजूद अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखेगा। भारतीय निर्यात संगठन महासंघ (FIEO) के डीजी अजय सहाय के अनुसार, 25 प्रतिशत टैरिफ से भारत की जीडीपी पर 0.2-0.5 प्रतिशत का असर हो सकता है, लेकिन 6 प्रतिशत से अधिक की विकास दर इसे संभाल सकती है। भारत वैकल्पिक बाजारों जैसे यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया, और चीन की ओर भी रुख कर रहा है। चीनी राजदूत शू फेइहोंग ने भारत से आयात बढ़ाने और व्यापार घाटा कम करने की बात कही, जो भारत के लिए एक बड़ा अवसर है।

ट्रंप की 'अमेरिका फर्स्ट' और 'मेक इन अमेरिका' नीतियां भारत के बिना पूरी तरह सफल नहीं हो सकतीं। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार और विनिर्माण केंद्र है। अमेरिकी कंपनियां जैसे एपल, टेस्ला, और बोइंग भारत में निवेश और उत्पादन बढ़ा रही हैं। ट्रंप के प्रस्तावित 25 प्रतिशत टैरिफ से भारत में बने उत्पाद महंगे होंगे, जिससे अमेरिकी उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ेगा। साथ ही, मेक इन अमेरिका की लागत बढ़ने से अमेरिकी उत्पाद वैश्विक बाजार में चीन से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाएंगे। अमेरिका को यह भी डर है कि भारत यूरोप, चीन, और दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे वैकल्पिक बाजारों की ओर रुख कर सकता है, जिससे उसका वैश्विक व्यापार में प्रभाव कम हो सकता है।

अमेरिकी विशेषज्ञ भी भारत के साथ टैरिफ युद्ध को गलत मानते हैं। अमेरिकी वित्त मंत्री जेनेट येलेन ने कहा कि भारत के साथ व्यापारिक तनाव वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और आर्थिक स्थिरता को नुकसान पहुंचा सकता है। अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कैथरीन ताई ने भारत के साथ संतुलित और पारस्परिक लाभकारी व्यापार वार्ताओं की वकालत की। राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषज्ञ लिसा कर्टिस ने चेतावनी दी कि भारत पर उच्च टैरिफ लगाना अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति को कमजोर करेगा और चीन को क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने का मौका देगा। अमेरिकी चैंबर ऑफ कॉमर्स भी मानता है कि उच्च टैरिफ से अमेरिकी कंपनियां और उपभोक्ता प्रभावित होंगे।

ट्रंप की धमकियों के बीच रैपिडान एनर्जी ग्रुप के चेयरमैन बॉब मैकनेली का बयान चर्चा में है। उन्होंने कहा कि ट्रंप भारत पर रूस से तेल आयात के लिए 25 प्रतिशत से लेकर 100 प्रतिशत तक टैरिफ लगा सकते हैं। लेकिन उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन ने भारत से रूसी तेल खरीदने की गुहार लगाई थी ताकि वैश्विक तेल की कीमतें नियंत्रित रहें। पूर्व अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी का एक वायरल वीडियो भी यही बात दोहराता है। गार्सेटी ने कहा कि भारत ने रूसी तेल इसलिए खरीदा क्योंकि अमेरिका चाहता था कि वह एक निश्चित मूल्य सीमा पर तेल खरीदे, जिससे वैश्विक बाजार में स्थिरता बनी रहे।

भारत ने इस दोहरे रवैये को उजागर करते हुए साफ कर दिया है कि वह अपनी ऊर्जा जरूरतों और रणनीतिक हितों से समझौता नहीं करेगा। भारत क्वाड का प्रमुख स्तंभ है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका की रणनीति को मजबूती देता है। भारत-अमेरिका iCET पहल के तहत कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, और रक्षा प्रौद्योगिकी में सहयोग बढ़ रहा है। भारत की तकनीकी क्षमता और मानव संसाधन अमेरिका के लिए अपरिहार्य हैं। भारत ने अमेरिका के लिए कृषि और डेयरी बाजार पूरी तरह खोलने से भी इनकार किया है, क्योंकि यह 70 करोड़ किसानों के हितों से जुड़ा है।

ट्रंप की बयानबाजी और धमकियां उनकी हताशा का प्रतीक हैं। वह भारत को नाराज नहीं करना चाहते, लेकिन साथ ही अपनी सामंती मानसिकता के कारण झुकना भी नहीं चाहते। भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह दबाव में नहीं आएगा और अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखेगा। आज की तारीख में भारत अमेरिका के लिए पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। ट्रंप की नीतियां और बयानबाजी अमेरिका के लिए ही नुकसानदेह साबित हो सकती हैं। भारत ने न केवल अपनी आर्थिक और रणनीतिक ताकत का परिचय दिया, बल्कि वैश्विक मंच पर दोहरे मानदंडों को बेनकाब कर एक नया संदेश भी दिया है।

हिरोशिमा की राख से उठते सवाल

हिरोशिमा दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं।

6 अगस्त 1945, इतिहास में यह तारीख उस भयावह क्षण के रूप में अंकित है, जब विज्ञान की शक्ति ने मानवता की सीमा लांघ दी थी और विनाश का नया अध्याय शुरू हुआ था। यही वह दिन था, जब अमेरिका ने जापान के शांत और सांस्कृतिक शहर हिरोशिमा पर 'लिटिल बॉय' नामक परमाणु बम गिराया था। उस एक विस्फोट ने लगभग एक लाख चालीस हजार लोगों की जान ले ली थी और लाखों अन्य को पीड़ा, विकलांगता, कैंसर, मानसिक संताप और सामाजिक बहिष्करण के लंबे दौर में धकेल दिया था। हिरोशिमा केवल एक शहर नहीं था, जो जलकर राख हुआ, वह मानव विवेक, चेतना और सहअस्तित्व की अवधारणा पर लगा एक ऐसा स्थायी घाव था, जो आज भी रिस रहा है।

हर साल 6 अगस्त को मनाया जाने वाला 'हिरोशिमा दिवस' पूरी दुनिया को यह याद दिलाता है कि जब वैज्ञानिक उपलब्धियां नियंत्रण से बाहर होती हैं तो वे मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन जाती हैं। हिरोशिमा पर गिराया गया बम कोई आम हथियार नहीं था। वह लगभग 15 किलोटन यानी 15 हजार टन टीएनटी विस्फोटक के बराबर शक्ति रखता था और उसकी विभीषिका ने केवल शहर की इमारतों को नहीं बल्कि वहां की मिट्टी, जल, वायु और मानव शरीर तक को रेडियोधर्मी विकिरण से बुरी तरह प्रभावित किया। बम विस्फोट के तुरंत बाद लगभग 80 हजार लोग मारे गए और वर्ष के अंत तक यह संख्या 1.4 लाख के पार पहुंच गई। वहां की संतानों में जन्म दोष, कैंसर, मानसिक विकार और सामाजिक कलंक के ऐसे दाग लगे, जो पीढ़ियों तक नहीं मिट सके। परमाणु बम से बच निकले लोगों को जापान में 'हिबाकुशा' कहा गया। इन लोगों ने केवल शारीरिक पीड़ा ही नहीं, सामाजिक तिरस्कार और मानसिक आघात भी सहा। जिन लोगों ने त्रासदी झेली, उन्हें अक्सर हीन दृष्टि से देखा गया। यही त्रासदी कुछ ही दिन बाद, 9 अगस्त को नागासाकी में भी दोहराई गई, जब अमेरिका ने 'फैट मैन' नामक बम गिराया और एक बार फिर करीब 70 हजार लोगों की जानें चली गईं। उन दो हमलों के बाद द्वितीय विश्वयुद्ध भले ही समाप्त हुआ लेकिन मानवता की चेतना पर जो चोट पड़ी, उसकी भरपाई आज तक नहीं हो पाई है। उन बम हमलों ने वैश्विक राजनीति को एक नए मोड़ पर ला खड़ा किया। उसके बाद युद्ध केवल सैनिकों और हथियारों का खेल नहीं रह गया बल्कि एक ऐसी होड़ में तब्दील हो गया, जिसमें विनाश की क्षमता को ही शक्ति का मानक माना जाने लगा।

हिरोशिमा और नागासाकी की विभीषिका के बाद परमाणु हथियारों की दौड़ शुरू हुई। अमेरिका के बाद सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन, भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और इजराइल जैसे देशों ने परमाणु बम बनाए और धीरे-धीरे यह शस्त्र राजनीतिक शक्ति और रणनीतिक नियंत्रण का प्रतीक बन गया। संयुक्त राष्ट्र की परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) और व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) जैसे प्रयासों के बावजूद परमाणु खतरा कम नहीं हुआ। कुछ देशों ने इन संधियों को स्वीकार नहीं किया, कुछ ने मात्र औपचारिकता निभाई और कुछ ने गुपचुप अपना परमाणु जखीरा बढ़ाया। भारत ने 1974 में 'स्माइलिंग बुद्धा' के नाम से पहला परमाणु परीक्षण किया और 1998 में पोखरण-2 द्वारा स्वयं को परमाणु संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। भारत ने 'नो फर्स्ट यूज' यानी पहले हमला नहीं करने की नीति अपनाई, जो एक जिम्मेदार परमाणु राष्ट्र की पहचान है लेकिन पाकिस्तान, जिसने 1998 में अपने परमाणु परीक्षणों से ताकत दिखाई, बार-बार इस नीति को चुनौती देता रहा है। भारत-पाक के बीच जब-जब तनाव बढ़ा, चाहे वह कारगिल युद्ध हो, पठानकोट हमला हो, बालाकोट स्ट्राइक हो या पुलवामा अथवा पहलगाम जैसे आतंकी हमले, विश्व समुदाय ने परमाणु टकराव की आशंका के साथ चिंताओं का इजहार किया।

आज हिरोशिमा दिवस की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है क्योंकि विश्व फिर से उन्हीं खतरों की छाया में जी रहा है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध, जिसमें रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकियां दी गई हैं, इस बात को स्पष्ट करती हैं कि परमाणु बम केवल संग्रहालय की वस्तु नहीं हैं। उत्तर कोरिया का मिसाइल परीक्षण, ईरान का परमाणु कार्यक्रम, चीन का परमाणु शस्त्रागार बढ़ाने का प्रयास हमें बार-बार इस सच्चाई से अवगत कराते हैं कि हिरोशिमा जैसे दृश्य दोहराए जाने की आशंका कभी भी पैदा हो सकती है। आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, वैश्विक महामारी, जैविक हथियारों और साइबर युद्ध जैसी नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब परमाणु हथियारों का अस्तित्व एक ऐसा छिपा हुआ विस्फोटक है, जो केवल एक गलत निर्णय, एक तकनीकी विफलता या एक गलतफहमी से ही धरती को विनाश के गर्त में धकेल सकता है। कई विशेषज्ञ मानते हैं कि हम अब परंपरागत युद्धों की नहीं बल्कि 'साइबर स्पेस', 'ड्रोन स्ट्राइक्स' और 'परमाणु धमकी' जैसे अस्थिर और अनिश्चित युद्धों के युग में प्रवेश कर चुके हैं।

वर्ष 2021 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा परमाणु हथियारों को प्रतिबंधित करने हेतु 'ट्रीटी ऑन द प्रोहिबिशन ऑफ न्यूक्लियर वेपन्स' पारित की गई लेकिन दुखद है कि इसमें कोई भी परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र शामिल नहीं हुआ। लगभग 70 देशों ने इस पर हस्ताक्षर किए, जिनमें से अधिकांश विकासशील और अपेक्षाकृत छोटे देश थे। यह एक त्रासदी है कि जो देश विश्व में सबसे अधिक परमाणु खतरे का कारण हैं, वही देश इस तरह की शांति संधियों से दूर हैं। परमाणु हथियारों को लेकर एक बड़ा खतरा यह भी है कि यदि कभी यह तकनीक आतंकवादी संगठनों या अस्थिर शासन व्यवस्थाओं के हाथ लग जाती है तो हिरोशिमा से भी अधिक भयावह स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वैश्विक सुरक्षा केवल सैन्य बजट बढ़ाने, सीमाओं पर हथियार तैनात करने या अंतरिक्ष से निगरानी रखने तक सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि यह वैश्विक निगरानी तंत्र, पारदर्शी सूचना साझेदारी, अंतर्राष्ट्रीय संधियों की मजबूती और वैश्विक जनचेतना पर आधारित होनी चाहिए।

हिरोशिमा दिवस वर्तमान में चेतना का दीप जलाने और भविष्य की पीढ़ियों को विनाश से बचाने की पुकार है। यह दिन बार-बार हमें यह सवाल करने को मजबूर करता है कि क्या विज्ञान का उपयोग केवल शक्ति प्रदर्शन और भय पैदा करने के लिए होना चाहिए? तकनीक का सर्वोच्च रूप विनाश है या सृजन? क्या राष्ट्रीय सुरक्षा का अर्थ केवल शस्त्रागार की संख्या है या विचारों, संवाद और समझ की शक्ति? 'फिर कभी नहीं', हिरोशिमा की राख से निकली यह मौन पुकार आज भी अनुगूंजित है। उस जलते शहर की चीखें आज भी चेतना को झकझोरती हैं कि विज्ञान केवल वही नहीं, जो रचता है, वह भी हो सकता है, जो मिटा देता है लेकिन चयन अब भी हमारे हाथ में है। हमें तय करना है कि हम अपने बच्चों को कैसी दुनिया सौंपेंगे, वह जहां शक्ति का अर्थ विनाश हो या वह, जहां शक्ति का अर्थ हो निर्माण, करुणा और सहअस्तित्व। दुनिया में जब तक एक भी परमाणु हथियार मौजूद है, तब तक हिरोशिमा दिवस प्रासंगिक रहेगा। यह न केवल हमें अतीत की गलती की याद दिलाता है बल्कि भविष्य की रक्षा के लिए संकल्प लेने का दिन भी है। यह मानवता के सबसे कठिन समय में विज्ञान और चेतना के सही संतुलन की आवश्यकता का स्मारक है। सच्ची शक्ति तब है, जब कोई विनाश कर सकता हो पर न करे। हिरोशिमा दिवस हमें यही सिखाता है कि शांति कोई विकल्प नहीं बल्कि एकमात्र रास्ता है।

मानवता पर कहर क्यों मनायें 'हिरोशिमा-दिवस'?

दृष्टिकोण

डॉ. सुधीर सक्सेना
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

छह अगस्त, सन् 1945। वह विश्व इतिहास का सबसे स्याह दिन था, जब विश्व के इतिहास में परिदृश्य में तेजी से उभरी महाशक्ति सामरिक, नैतिक और मानवीय दृष्टि से जघन्य अपराध करने जा रही थी। सूर्योदय के देश जापान में इस दिन सूरज हमेशा सा उगा, लेकिन कुछ ही घंटों के भीतर वातावरण कलुष और क्रंदन में डूब गया। चिड़ियों की चहचह और कलियों का चटखना शांत भी न हुआ था और नागरिक अपने-अपने लाम की ओर अग्रसर थे कि अमेरिका ने जापान के प्रमुख नगर हीरोशिमा पर एटम बम गिरा दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति की हरी झंडी के बाद यह ऑपरेशन लिटिल ब्वॉय का नतीजा था। जर्मनी मित्र-राष्ट्रों के समक्ष 8 मई को घुटने टेक चुका था, लेकिन अदम्य साहस के धनी जापान का प्रतिरोध जारी था। इस पर मित्र राष्ट्रों ने जापान पर ध्यान केंद्रित किया। फलतः लिटिल ब्वॉय को अंजाम दिया गया और जब इससे भी बात नहीं बनीं तो तीन दिन बाद नौ अगस्त को अमानुषिक अपराधों की दूसरी कड़ी 'फैट मैन' के तहत नागासाकी पर एटम बम गिराया गया। लिटिल ब्वॉय से जहां रूजवेल्ट अभिप्रेत थे, वहीं फैटमैन से विंस्टल चर्चिल। इस दोहरे एटामिक हमले ने जापान की कमर तोड़ दी और अंततः उसने 15 अगस्त को आत्मसमर्पण के कागजों पर दस्तखत कर दिये।

एटम बम गिराना यानि कहर बरपाना। बम पहले हीरोशिमा पर गिरा और फिर नागासाकी पर। यानि दोहरा कहर। एटम बम का पहला प्रायोगिक नहीं, वरन सामरिक व व्यावहारिक परीक्षण। बम का अर्थ था विनाश का तांडव। हीरोशिमा में 90,000 से 166,000 लोग ठौर मारे गये और नागासाकी में 60,000 से 80,000 लोग काल-कवलित हुये। दोनों नगरों में चतुर्दिक रेडियोधर्मी धूल के बादल छा गये। नगर तबाह हो चुके थे। करीब ढाई लाख लोग मारे गये थे। इनमें अधिकांश नागरिक थे, निर्दोष, शांतिप्रिय और कौटुंबिक। हीरोशिमा-नागासाकी अब चहलपहल और हँसी-खुशी की रोशन से भरे सस्पंद शहर नहीं थे, वरन अब वे वीरान, भुतहा और कराहों में डूबे ऐसे अभिशप्त शहर थे, जहां सामान्य नागरिक नहीं, वरन रेडियोधर्मिता के विकार से ग्रसत बदनसीब 'हिबाकुशा' रहते थे। जीवन जीने की गनबाते अवधारणा के बूते ये नगर विध्वंस की राख के ढेर से फीनिक्स पक्षी की भांति फिर उठ खड़े हुये, लेकिन क्या इससे विश्व-मानवता के प्रति किया गया विराट अपराध क्षम्य या कमतर हो जाता है?

अमेरिकी राष्ट्रपति टू मैन ने 'लिटिल ब्वॉय' की अनुमति दी तो इसके कई कारण हो सकते हैं। विश्व युद्ध में निर्णायक विजय, अमेरिकी प्रभुत्व की दंभोक्ति और खर्चीले परमाणु अभियान के औचित्य की तस्दीक, लेकिन लोकतंत्र, समता और स्वाधीनता के ध्वजवाहक के माथे कलंक लग चुका था। शांति का कपोत निष्प्राण था। स्वयं अल्बर्ट आइंसटीन क्षुब्ध और आहत थे। वह परमाणु बम के विकास में अपनी भूमिका को लेकर ग्लानि में डूबे हुये थे। एटामिक-विनाश ने उन्हें शांति, निःशस्त्रीकरण और वैश्विक-सरकार का हिमायती बना दिया था। जर्मनी से उनके विवश-पलायन और अमेरिकी राष्ट्रपति के नाम पत्र की अलग गाथा है, लेकिन हीरोशिमा-कांड से शोकाकुल आइंसटीन का सपना क्या पूरा हुआ? क्या आज परमाणु आयुधों की दौड़ तेज नहीं हुई है और यह होड़ विश्व में यत्र-तत्र विनाश के डरावने और स्याह गुल नहीं खिला रही है?

सन् 1945 के मध्यवर्ती मास में हीरोशिमा-नागासाकी में हादसा हुआ। लगा कि जमीन वंध्या हो गयी है। धरती फिर अंगड़ाई नहीं लेगी, लेकिन करीब एक छमाही में ही वसंत आया तो 'क्योचिकूतो' यानि कनेर फिर खिल उठे। यह मृत्यु पर जीवन की जय थी। विनाश पर सृजन का उदघोष था। कनेर अभी भी फूलते हैं और विनाश की गाथा के ज़र्द पन्नों के प्रतीक नगरों में नागरिकों को 79 वर्ष पहले की अमानुषिक त्रासदी की याद दिलाते हैं। हिरोशिमा में एटम बम छह अगस्त को प्रातः सवा आठ बजे गिराया गया था। आज सारी दुनिया में हीरोशिमा-दिवस मनाया जाता है। सुबह-सबेरे सवा आठ बजे से प्रार्थना-सभाओं का अविराम-क्रम शुरू हो जाता है। हीरोशिमा में सन 1945 में छह अगस्त और नागासाकी में नौ अगस्त की सुबह अन्य पूववर्ती सुबहों से भिन्न थी। उनके स्मारक बनाये गये, जहां लोग जुटते हैं। मगर प्रश्न कई हैं। अबूझे, किंतु जरूरी प्रश्न। आज दुनिया रणक्षेत्र में बदलती जा रही है। शांतिप्रिय राष्ट्रों और राष्ट्र-नायकों पर युद्ध का उन्माद तारी है, जबकि दुनिया में शांति, इनोची या मीर की ज्यादा जरूरत है। क्या दुनिया में पिछले आठ दशकों में ऐसा कुछ सार्थक या ठोस हुआ है कि दुनिया आश्वस्त हो कसे कि विश्व में हीरोशिमा के हादसे की पुनरावृत्ति नहीं होगी?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सूर्यदीप कुशवाहा

अरे दिव्य- बाबाओं से बच के रहना रे बाबा !

अब कलमुहे कलयुग की बात है... पृथ्वी पर विषाणु जनित बीमारियों, बाबाओं की स्त्री चरित्र पर उटपटांग बयानबाज़ी से आंधी-तूफान का धुंआ उठना और स्त्रियों के खूंखार और माँ-बाप, बेटा-बेटी और भाई -बहन जैसे रिश्तों पर खून सने हाथों की दास्तां खूब प्रसारित हो रही हैं। मृत्युलोक में परेशान लोगों ने ईश्वर की आराधना की। उन्होंने भगवान से दिव्य-बाबा की मांग की जो उन्हें इन सब प्रकोपों से मुक्ति दिला सके। अंततः भगवान को उन पर तरस आ गया और उन्होंने एक साथ कई दिव्य-बाबा पृथ्वी पर उतार दिया।

लोगों ने उन दिव्य-बाबाओं को सिर-आंखों पर बैठा लिया। जिससे वे लोगों के सिर पर चढ़ गए। सभी उन पर फूलों की बड़ी-बड़ी मालाओं के साथ अपनी मेहनत की कमाई हरियाली भी चढ़ाने लगे। पहले पहल दिव्य-बाबाओं को लोगों की इस हरकत से बहुत असहज हो रहा था। वह बार-बार लोगों से कहता भी, 'रहने दो, इन सबकी क्या जरूरत है।पैसा हाथ का मैल है। हमको इसका क्या काम।' किंतु लोग नहीं माने और खूब चढ़ावा चढ़ा कर बाबाओं का आलीशान महल को तैयार करा दिया। उन सभी बाबाओं की झोली में विलासिता की सभी वस्तुएँ आ गिरी। इनसे बाबाओं के भी फिसल कर नीचे गिरने लगे। अंततः दिव्य-बाबाओं की उन विलासिता के बोझ तले दबकर सात्विक आत्मा मर गई। अब बस ज़बान पर कथा था और विलासिता में नथा था।

दिव्य -बाबाओं के क्रिया -कलाप से त्राहिमाम-त्राहिमाम करने लगे। बेचारी स्त्रियां उनके उटपटांग बयानबाजी के निशाने पर आ गईं। लोग फिर भगवान से प्रार्थना करने लगे। इस बार भी भगवान ने एक और दिव्य-बाबा को पृथ्वी पर भेज दिया। लेकिन उसका भी यही हश्र हुआ।कलयुग की माया में बेचारा फंस गया और ज्ञान बस प्रवचन में ही रह गया। यह ज्ञान दिव्य- बाबा के लिए बेकार था और बस कथा में लेता आकार था।

इस तरह लोग बार-बार दुखों से आजीज आकर दिव्य -बाबाओं के पास जाते और लुट -पीटकर वापिस आ जाते। बाद में कुछ बुद्धजीवी भक्तों को ही एहसास होता ठगी का। बाकि ईश्वर की मर्जी मानकर चुप रह जाते। बाबाओं का धंधा चमक गया। अब स्वर्ग जाना नहीं चाहते थे। भक्तों की संख्या दिन -प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब प्रार्थना भगवान से न करके हर बार दिव्य-बाबाओं से ही करते हैं। वह सभी दिव्य -बाबा भगवान के सच्चे लाल बनकर मालामाल हो रहे हैं। भक्त बेचारा गरीब का गरीब ही है।

इस बार जब दिव्य-बाबा ने स्त्रियों के चरित्र पर अंगुली उठाई तो कलयुग की नारी भड़क गई और मांग करने लगीं बहिष्कार की। तब दिव्य -बाबाओं तिरछी नज़र से देखा और चेली बनाने पर जोर दिया। कुछ दिव्य-बाबाओं का हृदय पत्थर नहीं है क्योंकि उनके पास भी दिल है और मानव शरीर है। प्रेम भक्ति के लिए एकांत वास जरूरी है। पहले के जमाने में चमत्कार होते थे। तब तीसरी आँख नहीं हुआ करती थी। लेकिन तीसरी आँख आ जाने से चमत्कार अब ना जाने कहां चला गया? दिव्य बाबा भविष्य बताते हैं और खुद का भविष्य बनाते हैं। लेकिन अपनी दैवीय शक्ति से आपदा को नहीं जान पाते हैं। भूत-प्रेत भगाते हैं तो लोगों ने उसका भी भरपूर स्वागत किया। आज भी खूब फूल-मालाएं गाढ़ी कमाई चढ़ाई। लेकिन उसे कुछ भी भला नहीं हुआ... और परेशानी जस-का-तस रहा। तब दिव्य बाबा ने मन-ही-मन से ऊपर उठ कर कहा, 'हर बार तुम लोग जितनी मर्जी भक्ति में जल, फूल -माला चढ़ा लो लेकिन बिना बड़ा दान के तुम्हारा दुःख नहीं कटेगा।'

बार-बार दिव्य-बाबाओं के काली -पीली करतूतों की घटना की पुनरावृत्ति होने पर यह सोचना चाहिए कि ऐसा हो क्यों रहा है... क्या कारण है इसके पीछे। लोग इन तथाकथित भेजे दिव्य-बाबाओं को हरी -हरी नोटों की हरियाली के बोझ तले उनकी अंतर्रात्मा को दम तोड़ने को विवश कर देते हैं, जबकि अपनी ओर से वे बचने का पूरा प्रयास करते हैं। लोगों को अपना भला-बुरा सोच लेना चाहिए।

तकनीक और हम

तनुजा चौबे

लेखक साहित्यकार हैं।

एआई का जमाना और लेखकीय संवेदना

रचनात्मकता का अर्थ है मनुष्य की मौलिक सोच — कुछ नया गढ़ने, अनुभवों से अर्थ निकालने और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता। कला, लेखन, संगीत, अभिनय, चित्रकला, नाट्यकला आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें मानव का अनुभव, संवेदना और व्यक्तित्व झलकता है। जब एआई इन क्षेत्रों में हस्तक्षेप करता है, तो यह प्रश्न उठता है– क्या कृत्रिम प्रणाली में भी संवेदना हो सकती है? आज एआई आधारित चित्रकार, गीतकार, लेखक, यहां तक कि संवाद लेखक भी सामने आ रहे हैं। कुछ ही सेकंड में कविता, कहानी या निबंध तैयार हो जाते हैं। लेकिन क्या वह रचना उतनी ही सजीव और भावनात्मक होती है जितनी एक लेखक की अनुभूति से निकली हुई होती है?

तकनीक ने मानव जीवन में क्रांति ला दी है। हर क्षेत्र में इसका हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है- शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, मीडिया, लेखन और कला तक में अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और ऑटोमेशन की सक्रियता देखी जा सकती है। विशेष रूप से हाल के वर्षों में एआई और ऑटोमेशन ने न सिर्फ कार्यप्रणाली को तेज़ किया है, बल्कि मानव की रचनात्मकता को एक नई दिशा भी दी है। लेकिन यह बदलाव सिर्फ सुविधा नहीं, बल्कि एक चुनौती भी बन गया है।

रचनात्मकता का अर्थ है मनुष्य की मौलिक सोच – कुछ नया गढ़ने, अनुभवों से अर्थ निकालने और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता। कला, लेखन, संगीत, अभिनय, चित्रकला, नाट्यकला आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें मानव का अनुभव, संवेदना और व्यक्तित्व झलकता है। जब एआई इन क्षेत्रों में हस्तक्षेप करता है, तो यह प्रश्न उठता है- क्या कृत्रिम प्रणाली में भी संवेदना हो सकती है?

आज एआई आधारित चित्रकार, गीतकार, लेखक, यहां तक कि संवाद लेखक भी सामने आ रहे हैं। कुछ ही सेकंड में कविता, कहानी या निबंध तैयार हो जाते हैं। लेकिन क्या वह रचना उतनी ही सजीव और भावनात्मक होती है जितनी एक लेखक की अनुभूति से निकली हुई होती है?

टूल और ऑटोमेशन एक सीमा तक रचनात्मकता की नकल कर सकते हैं, लेकिन उनमें मौलिकता और अनुभव की गहराई का अभाव होता है। उदाहरण के लिए, एक लेखक जब किसी सामाजिक घटना से प्रभावित होकर लेख लिखता है, तो उसमें उसकी दृष्टि, संवेदना और विचारधारा का समावेश होता है। वहीं AI मात्र पहले से मौजूद डाटा के आधार पर उत्तर तैयार करता है।

हालांकि, एआई मानव रचनात्मकता का स्थान नहीं ले सकता, पर यह उसे सशक्त ज़रूर कर सकता है। यह लेखक को नए संदर्भ दे सकता है, कलाकार को डिज़ाइन के नए विचार सुझा सकता है, संगीतकार को ताल और सुर के संयोजन में सहायता कर सकता है। यह एक टूल है – साधन, साध्य नहीं। जैसे कैमरा ने चित्रकार की जगह नहीं ली, वैसे ही एआई लेखक की जगह नहीं ले सकता।

इसका दूसरा पहलू यह भी है कि ऑटोमेशन और एआई कई ऐसे कामों को आसान बना रहे हैं जिनमें समय अधिक लगता था। उदाहरण के लिए, डेटा एंट्री, अनुवाद, स्क्रिप्ट फॉर्मेटिंग, बेसिक रिपोर्टिंग जैसे कार्यों को यह अत्यंत शीघ्रता से संपन्न करता है। इससे व्यक्ति के पास अपनी रचनात्मकता पर केंद्रित होने का अधिक समय बचता है। यही वह स्थान है जहाँ AI और मानव की साझेदारी रचनात्मकता को और भी सशक्त बना सकती है।

किंतु एक चिंता यह भी है कि यदि हर व्यक्ति AI आधारित टूल्स का उपयोग करके सामग्री तैयार करने लगे, तो मौलिक लेखन और सोच की प्रक्रिया कमज़ोर पड़ जाएगी। हम रचनात्मकता को सिर्फ उत्पाद मानने लगेंगे, संवेदना और अनुभव की जगह दक्षता और गति को प्राथमिकता देंगे। इससे मानव की स्वाभाविक रचनात्मकता धीरे-धीरे क्षीण हो सकती है।

इसलिए ज़रूरत है संतुलन की – हमें एआई और ऑटोमेशन को एक सहायक उपकरण के रूप में उपयोग करना चाहिए, न कि अपने रचनात्मक दायित्वों से मुक्त होने के बहाने के रूप में। हमें यह स्वीकार करना होगा कि तकनीक का उद्देश्य मनुष्य को सशक्त करना है, प्रतिस्थापित करना नहीं।

शिक्षा क्षेत्र में भी AI की भूमिका तेजी से बढ़ रही है। यह छात्रों की योग्यता के अनुसार पर्सनलाइज्ड लर्निंग प्लान तैयार करता है, शिक्षकों को मूल्यांकन में सहायता करता है और पाठ्यक्रम को अधिक रोचक बनाता है। लेकिन यदि विद्यार्थी केवल AI आधारित उत्तरों पर निर्भर हो जाएँ, तो उनकी विश्लेषण क्षमता, जिज्ञासा और आत्मचिंतन का ह्रास होगा।

इसी तरह, लेखन में एआई अगर उपयोगी सुझाव देता है, वाक्य विन्यास सुधारता है या वैकल्पिक शब्द प्रस्तुत करता है, तो यह स्वागत योग्य है। लेकिन यदि लेखक उसे अपने स्थान पर लिखने का माध्यम बना ले, तो उसकी रचनात्मक आत्मा कुंठित हो सकती है।

इसलिए आवश्यक है कि हम एआई से सहकार्य करें, उसके अधीन नहीं हों। रचनात्मकता का मूल स्रोत अंतर्मन है, अनुभव है, मानवीय करुणा और संवेदना है। एआई की सीमाएँ हैं – वह दुख, प्रेम, पीड़ा, आशा या प्रेरणा का अनुभव नहीं कर सकता, केवल उसका अनुकरण कर सकता है।

अंततः, रचनात्मकता केवल उत्पाद नहीं है, वह एक प्रक्रिया है – जिसमें लेखक अपने भीतर उतरता है, विचारों को खंगालता है, और शब्दों में जीवन भरता है। यह प्रक्रिया यंत्रों के बस की बात नहीं।

तकनीक की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि हम उसका उपयोग किस तरह करते हैं। एआई और ऑटोमेशन हमारे लिए अवसर हैं – यदि हम उन्हें केवल उपकरण मानें और अपनी मूल चेतना, सोच और संवेदना को बनाए रखें।

मानवीय स्वभाव और समाज की सूक्ष्म पड़ताल

पुस्तक समीक्षा

दीपक गिरकर

समीक्षक

'शुभ मुहूर्त' सुपरिचित लघुकथाकार देवेंद्रसिंह सिसौदिया का पहला लघुकथा संग्रह है। देश के समाचार पत्रों और साहित्यिक पत्रिकाओं में आपकी लघुकथाएँ निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। लेखक कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। इस संग्रह में 82 लघुकथाएँ संकलित है। लेखक ने इस संग्रह की लघुकथाओं में मानवीय संवेदना, सामाजिक सरोकार और पारस्परिक संबंधों का ताना-बाना प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की रचनाओं में रचनाकार मानवीय स्वभाव और समाज की सूक्ष्म पड़ताल करते हुए दिखते हैं। लघुकथाकार ने बहुत ही सटीकता से सामाजिक-पारिवारिक मूल्यों के ह्रास के प्रति चिंता व्यक्त की है। इनकी लघुकथाएँ हमारे आसपास की हैं। अधिकतर लघुकथाएँ भावनात्मक और मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत हैं। इस लघुकथा संग्रह की भूमिका वरिष्ठ साहित्यकार, लघुकथाकार डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल ने लिखी है। उन्होंने लिखा हैं - दूसरी ओर चाहे समाज में लाख बुराइयाँ हैं, पर लेखक को आज भी अच्छाइयों पर भरोसा है। इसलिए संग्रह की अधिकाँश लघुकथाओं में जगह-जगह सकारात्मक सोच की बानगियाँ देखने को मिलती हैं।

संग्रह की शीर्षक लघुकथा 'शुभ मुहूर्त' एक सहज, भावनात्मक और हृदयस्पर्शी रचना है, जिसमें पारिवारिक स्नेह, विशेषकर पिता-पुत्री के मधुर संबंध को बहुत सुंदरता से चित्रित किया गया है। इस रचना में एक साधारण घटना को भावनात्मक तरीके से पेश किया गया है। 'अरे पापा! आपके इस प्यार से बढ़कर कोई और शुभ मुहूर्त हो सकता है भला?' यह लघुकथा की आत्मा है। लघुकथा 'मान' माँ-बेटे के निश्छल प्रेम और श्रद्धा का गहन भाव से चित्रण करती है। अत्यंत सरल भाषा में एक छोटे संवाद के माध्यम से गहरी भावनात्मक अनुभूति उत्पन्न होती है। लघुकथा का समापन न केवल हृदय को स्पर्श करता है, बल्कि माँ-बेटे के रिश्ते की ऊँचाई भी दर्शाता है। 'व्रत' लघुकथा एक आम गृहिणी के त्याग और निःशब्द बलिदान को बड़ी सहजता से उजागर करती है, जहाँ उसका व्रत धार्मिक कम, पारिवारिक ज़िम्मेदारी का प्रतीक बन जाता है। अंत तक आते-आते लघुकथा एक साधारण घटना से गहरे सामाजिक अर्थ ग्रहण करती है, जिससे पाठक स्तब्ध रह जाता है। सुनीता का व्रत न केवल उसकी आस्था, बल्कि उसके प्रेम और प्रबंधन की

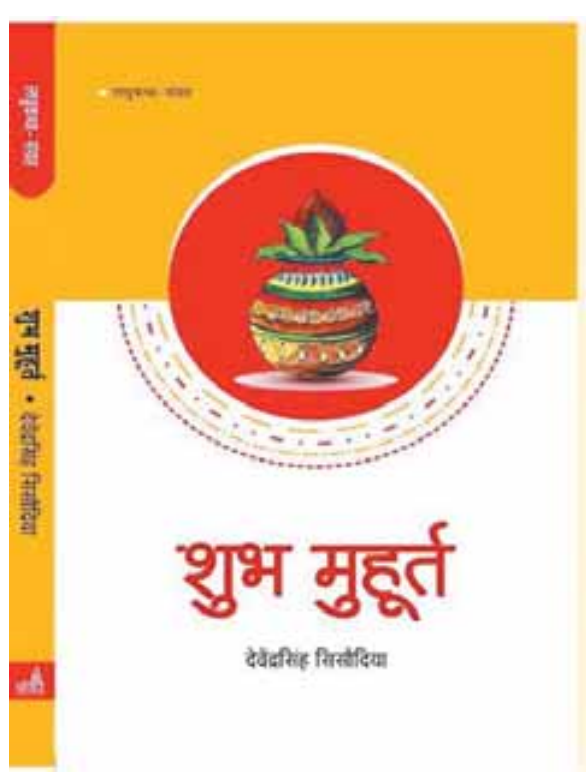

पराकाष्ठा बनकर उभरता है। 'परिचय पत्र' लघुकथा सत्ता और वर्दी के पीछे छिपी दोहरी मानसिकता को उजागर करती है। यह लघुकथा बताती है कि जब नियम तोड़ने वाला खुद नियम का रक्षक हो, तब न्याय का तराजू असंतुलित हो जाता है। सशक्त अंत इस विडंबना की ओर संकेत करता है कि वर्दी पहन लेना ही कर्तव्यपरायण होना नहीं होता। 'पिकनिक' लघुकथा सामाजिक संवेदनाओं और वर्गभेद की जटिलता को उजागर करती है। कामवाली बाई का साहसी और करुणामय व्यवहार, उसकी सच्ची मानवीयता को दर्शाता है। यह रचना दिखाती है कि इंसानियत पद या पैसे से नहीं, बल्कि दिल से पैदा होती है।

देवेंद्रसिंह सिसौदिया की लघुकथाएँ समाज की विसंगतियों, असमानताओं और अन्याय को केवल दर्शाती नहीं हैं, बल्कि उन पर प्रहार भी करती हैं। वे केवल इन समस्याओं को उजागर नहीं करते, बल्कि इन पर प्रश्न उठाते हैं और समाज को इन मुद्दों पर सोचने के लिए मजबूर करते हैं। लेखक की रचनाएँ अपने आसपास के परिवेश को जीवंत तरीके से प्रस्तुत करती हैं। उनके पात्र और घटनाएँ समाज के विभिन्न वर्गों और स्थितियों का सही चित्रण करती हैं। लेखक की लघुकथाएँ आम पाठकों को बहुत आकर्षित करती हैं क्योंकि उनके पात्र, घटनाएँ और कथानक पाठक की आत्मा से जुड़ते हैं। देवेंद्रसिंह सिसौदिया की लघुकथाएँ न सिर्फ समाज की बारीकियाँ उजागर करती हैं, बल्कि वे हमारे भीतर के मानवीय मूल्य और संवेदनाओं को भी जागरूक करती हैं। संग्रह की भाषा सहज, स्वाभाविक और सम्प्रेषणीय है, जो पाठकों के लिए एक बड़ी ताकत है। सरल और प्रभावी भाषा के कारण, लेखक के विचार और संदेश आसानी से समझ में आ जाते हैं, और पाठक बिना किसी कठिनाई के इनसे जुड़ सकते हैं। 104 पृष्ठ का यह लघुकथा संग्रह निश्चित रूप से पाठकों को सोचने और आत्ममंथन करने के लिए प्रेरित करता है। यह न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और सुधार की दिशा में भी एक कदम आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। कुल मिलाकर, यह संग्रह एक सार्थक और प्रभावी प्रयास है, जो समाज के बदलते परिवेश को समझने और सुधारने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

पुस्तक : शुभ मुहूर्त (लघुकथा संग्रह)
लेखक : देवेंद्रसिंह सिसौदिया
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य : 249/- रूपए

टिकाऊ भविष्य की ओर आदिवासी जीवनदर्शन

विश्व आदिवासी दिवस पर विशेष

संध्या राजपुरोहित

लेखक आदिवासी बाहुल्यद क्षेत्रों मेंकार्यरत हैं।

आदिवासी समुदाय, जिनका जीवन जंगलों, पहाड़ों, नदियों और प्रकृति की लय के साथ बंधा हुआ है। वे जंगल को सिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि मां, रक्षक और जीवनदाता मानते हैं। उनके लिए प्रकृति पूजा का नहीं, साझेदारी का माध्यम है। उनके गीतों में नदी बहती है, उनके त्योहारों में वृक्ष खिलते हैं और उनकी जीवनशैली में धरती मुस्कुराती है। आदिवासी समाज का जीवन पूरी तरह प्रकृति पर आधारित होता है। उनके लिए जंगल केवल जीवन यापन का साधन नहीं, बल्कि पूजा, परंपरा, ज्ञान और अस्तित्व का केंद्र होता है। वे न तो जंगल को अलग मानते हैं, न ही उस पर अपना स्वामित्व जताते हैं। उनके लिए जंगल उनके शरीर का विस्तार है, उनकी सांसों की गंध है, और उनकी आत्मा की गहराई है।

प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त कोविश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। यह दिन उन समुदायों को समर्पित है, जिन्होंने सभ्यता के आरंभ से ही प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना से जीवन जिया है। उनका जीवन दर्शन, संस्कृति, भाषा, लोककला, संगीत और पारंपरिक ज्ञान हमारी साझा विरासत का अनमोल हिस्सा है। यह दिवस न केवल एक उत्सव है, बल्कि एक अवसर है- आदिवासी समाज के अधिकारों, संघर्षों और उनके संरक्षण की आवश्यकता को पहचानने का । यह दिन न केवल आदिवासियों की सांस्कृतिक पहचान, अधिकारों और संघर्षों को रेखांकित करता है, बल्कि हमें एक महत्वपूर्ण सवाल पर सोचने के लिए प्रेरित करता है–क्या आज की तेज़ रफ्तार 'विकास' की दौड़ में हमने उन लोगों की आवाज़ को अनसुना नहीं कर दिया जो सदियों से प्रकृति के साथ सबसे गहरे और सौहार्दपूर्ण संबंधों में जीते आए हैं?

आदिवासी समुदाय, जिनका जीवन जंगलों, पहाड़ों, नदियों और प्रकृति की लय के साथ बंधा हुआ है। वे जंगल को सिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि मां, रक्षक और जीवनदाता मानते हैं। उनके लिए प्रकृति पूजा का नहीं, साझेदारी का माध्यम है। उनके गीतों में नदी बहती है, उनके त्योहारों में वृक्ष खिलते हैं और उनकी जीवनशैली में धरती मुस्कुराती है।आदिवासी समाज का जीवन पूरी तरह प्रकृति पर आधारित होता है। उनके लिए जंगल केवल जीवन यापन का साधन नहीं, बल्कि पूजा, परंपरा, ज्ञान और अस्तित्व का केंद्र होता है। वे न तो जंगल को अलग मानते हैं, न ही उस पर अपना स्वामित्व जताते हैं। उनके लिए जंगल उनके शरीर का विस्तार है, उनकी सांसों की गंध है, और उनकी आत्मा की गहराई है।

राष्ट्रीय वन नीति 1988 में भी यह स्वीकार किया गया है कि जंगलों के संरक्षण में स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से आदिवासियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह बात केवल वैधानिक नहीं, व्यावहारिक भी है, क्योंकि आदिवासी जंगलों को बाहरी दुनिया से बेहतर जानते हैं। वे पेड़ों की आयु, औषधीय गुण, मौसम की चाल, पशु-पक्षियों के व्यवहार और जलस्रोतों के स्थानों को अनुभव से पहचानते हैं। आदिवासी वन सम्पदा का अत्यंत विवेकपूर्ण और सतत उपयोग करते हैं। वन संसाधनों का उपयोग वे अत्यंत विवेकपूर्ण ढंग से करते हैं। महुआ, चिरौंजी, तेंदूपत्ता, साल बीज, आंवला, हर्रा, बहेरा जैसे अनेक लघु वनोपज उनके जीवन में महत्व रखते हैं। वे इन्हें केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि सामूहिक उपभोग और समुदाय हित के लिए एकत्र करते हैं। महुआ के फूल हों, साल के पत्ते, तेंदूपत्ता, शहद या लाख–हर चीज़ का संग्रह एकनैतिक मर्यादाके साथ किया जाता है। वन केवल उनकी भूख मिटाते हैं ऐसा नहीं- वे उन्हेंऔषधि, ऊर्जा, संस्कृति और शिक्षाभी देते हैं।

मध्यप्रदेश, आदिवासी बहुल राज्य है, वहां गोंड, भील, बैगा, कोरकू, सहरिया जैसे अनेक समुदाय सदियों से निवासरत हैं। इनका जीवन वनों से जुड़ा हुआ है। जंगल इनके भोजन, ईंधन, औषधि, आवास और संस्कृति का स्रोत है। बैगा जनजाति, जिसे 'जंगल का डॉक्टर' भी कहा जाता है,सैकड़ों औषधीय पौधों की जानकारी पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करती आई है। क्योंकि उनके पास लगभग 250 से अधिक औषधीय पौधोंकी पहचान और उपयोग की पारंपरिक जानकारी है। वे पेड़ की छाल, पत्ते, बीज और जड़ों का उपयोग कर बीमारियों का इलाज करते हैं – बिना वनस्पति को नुकसान पहुँचाए। वे सैकड़ों वर्षों से जड़ी-बूटियों द्वारा चिकित्सा करते आए हैं। वे बिना पेड़ काटे, बिना जड़ों को हानि पहुँचाए दवाओं का निर्माण करते हैं। यह उनकी पर्यावरणीय चेतना और संवेदनशीलता को दर्शाता है। आज भी भारत के अधिकांश आदिवासी गांव ऐसे हैं जहाँ वनों के बगैर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। चाहे वह दैनिक भोजन हो, दवा हो या आजीविका–वनों के बिना सब अधूरा है।

मध्यप्रदेश के कई आदिवासी क्षेत्रों में महिलाएँ 'वन-सहेली' या 'जंगल-बचाओ समिति' के माध्यम से वनों की रक्षा में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। धार, डिंडोरी, मंडला और अलीराजपुर जैसे जिलों में महिलाओं ने जंगल की अवैध कटाई रोकने, आग लगने से बचाव करने और वृक्षारोपण जैसे कार्यों में अनुकरणीय योगदान दिया है। यहाँ रहने वाले भील समुदाय ने कई जगहों परसामूहिक जल संरक्षण, जंगलों की पहरेदारीऔरवन अधिकार अधिनियमके तहत अपने अधिकारों के साथ-साथ संरक्षण की जिम्मेदारी भी उठाई है।यहाँ महिलाओं ने खुद 'जंगल प्रहरी समूह' बनाया। अवैध लकड़ी कटाई रोकने के लिए उन्होंने स्वयं जंगल की पहरेदारी शुरू की। आज वे न केवल जंगल बचा रही हैं, बल्कि वहाँ 500 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफलमें फिर से हरियाली लौटी है।

आदिवासी समाज में पर्यावरण केवल एक वस्तु नहीं, एक चेतना है। वे जल, जंगल और जमीन को जीवन के त्रिकोण के रूप में देखते हैं। नदी हो या पहाड़, पेड़ हो या पशु – सबके साथ उनका रिश्ता आध्यात्मिक होता है। वे नदी को माँ मानते हैं, पेड़ को देवता और पहाड़ को संरक्षक। यह सोच उन्हें प्रकृति का पूजक और रक्षक बनाती है।।

आदिवासियों की कृषि पद्धति भी पारंपरिक होती है। वे स्थान-स्थान पर खेती करते हैं, जिससे जमीन को विश्राम मिलता है और उसकी उपजाऊ शक्ति बनी रहती है। वे बिना रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के जैविक खेती करते हैं। यह प्रणाली पर्यावरण के लिए सुरक्षित होती है और मिट्टी के स्वास्थ्य को संरक्षित रखती है। उनकी पारंपरिक सिंचाई विधियाँ जल संरक्षण के आदर्श उदाहरण हैं।

दुर्भाग्यवश विकास की अंधी दौड़ में आदिवासी समाज सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। उनकी ज़मीनें छिनी गईं, जंगल कटे, जलस्रोत प्रदूषित हुए और उन्हें मुख्यधारा से काटने की कोशिश की गई। परंतु इसके बावजूद भी उन्होंने अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा। वे जिस तरह सामूहिक जीवन जीते हैं, उसमें संपत्ति का लालच, सामाजिक भेदभाव और प्रतिस्पर्धा का स्थान न्यूनतम है। लेकिन आज की उपेक्षापूर्ण नीतियाँ, खनन परियोजनाएं, जबरन विस्थापन और सांस्कृतिक क्षरण ने उनके अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। संविधान में अनुसूचित जनजातियों को विशेष अधिकार मिले हैं, वन अधिकार अधिनियम 2006 भी उन्हें जल, जंगल और ज़मीन पर अधिकार देता है, लेकिन ज़मीनी हकीकत यह है कि अभी भी आदिवासी क्षेत्रों में उन्हें पर्याप्त सम्मान और अवसर नहीं मिल पा रहे हैं। आदिवासी समाज हमें सिखाता है कि जंगल केवल लकड़ी के टुकड़े नहीं, बल्कि साँस लेते जीव हैं। नदियाँ केवल पानी की धाराएँ नहीं, बल्कि सभ्यता की नसें हैं। और धरती केवल खनन की ज़मीन नहीं, बल्कि जीवन की माँ है।

वर्तमान में जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वॉर्मिंग, प्रदूषण और जैव विविधता के संकट से जूझ रही है, तब आदिवासी समुदाय का पारंपरिक ज्ञान, संरक्षण की लोकसंस्कृति और संतुलित उपभोग की धारणा हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकती है। आधुनिक समाज जो 'सस्टेनेबिलिटी' के मॉडल खोज रहा है, वह आदिवासी जीवन में सहज रूप से विद्यमान है।उनके पर्व-त्योहार भी प्रकृति से जुड़े होते हैं – जैसे हरियाली अमावस्या, जिसमें वे वृक्षारोपण करते हैं और पेड़ों को राखी बाँधकर संरक्षण की शपथ लेते हैं। यह संवेदनशीलता उन्हें प्रकृति के प्रति अधिक उत्तरदायी बनाती है।

आज हम आदिवासी जीवनशैली की उन विशेषताओं को समझें जो हमें एक हरित, शांतिपूर्ण और संतुलित भविष्य की ओर ले जा सकती हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम न केवल उनकी संस्कृति का संरक्षण करें, बल्कि उनकी भूमि, जल, जंगल और संसाधनों के अधिकारों की रक्षा भी सुनिश्चित करें। यह केवल नैतिक कर्तव्य नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

गुना की जनता ने सत्ता के महाराजाओं को सबक सिखाया : जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि गुना की बाढ़ त्रासदी ने भाजपा सरकार की संवेदनहीनता को उजागर कर दिया है। जिस समय गुना और आसपास के गाँव-शहर पानी में डूबे थे, लोग अपने घरों और बच्चों को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय सरकार केवल कागजी कार्रवाई और मीडिया शो पर ध्यान दे रही थी। मुख्यमंत्री मोहन यादव और केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कल बाढ़ प्रभावित गुना का दौरा किया, लेकिन यह दौरा केवल औपचारिकता और फोटो सेशन तक ही सीमित रहा । जनता के गुस्से और विरोध के कारण सत्ता के महाराजाओं को उल्टे पांव उड़न-खटोले से वापस लौटना पड़ा।

भाजपा सरकार की संवेदनहीनता

पटवारी ने कहा कि 32 साल बाद हुई सबसे भीषण बारिश के बाद भी भाजपा सरकार ने राहत और बचाव कार्यों में गंभीरता नहीं दिखाई। जिन कॉलोनियों में पहली मंज़िल तक पानी भर गया, वहां प्रशासन और जनप्रतिनिधि दिखाई तक नहीं दिए। मुख्यमंत्री केवल उन इलाकों में गए, जहां कोई विरोध न हो, ताकि मीडिया में 'सकारात्मक तस्वीरें' दिखाई जा सकें।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी संदेश कुमार जैन बने एम्स भोपाल के नए डिप्टी डायरेक्टर

भोपाल। एम्स भोपाल में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी श्री संदेश कुमार जैन ने डिप्टी डायरेक्टर (प्रशासन) के रूप में औपचारिक रूप से कार्यभार ग्रहण कर लिया है। यह पहली बार है जब किसी पुलिस सेवा के अधिकारी को एम्स भोपाल की प्रशासनिक कमान सौंपी गई है। तकनीकी दक्षता और प्रशासनिक अनुभव का अनूठा संगम श्री संदेश कुमार जैन का शैक्षणिक और व्यावसायिक अनुभव उन्हें इस महत्वपूर्ण दायित्व के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बनाता है। उन्होंने मैनिट भोपाल से बीटेक करने के बाद इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएशन किया है। इंजीनियरिंग और आईटी में विशेषज्ञता के साथ-साथ वे राज्य पुलिस सेवा के एक अनुभवी अधिकारी भी हैं, जिन्हें अनुशासन, नेतृत्व और संकट प्रबंधन का व्यापक अनुभव है। उनकी नियुक्ति से एम्स भोपाल के प्रशासनिक कार्यों में नई ऊर्जा और तकनीकी दक्षता आने की उम्मीद है।

एम्स भोपाल के डॉक्टरों ने फॉरेंसिक साक्ष्यों के सुरक्षित संग्रहण और परिवहन हेतु टैम्पर-प्रूफ

क्यूआर-लेबल तकनीक विकसित की

भोपाल। एम्स भोपाल ने फॉरेंसिक विज्ञान और स्वास्थ्य नवाचार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। संस्थान के फॉरेंसिक मेडिसिन एवं टॉक्सिकोलॉजी विभाग ने एक टेंपर-प्रूफ, क्यूआर कोड युक्त लेबलिंग प्रणाली विकसित की है, जो चिकित्सा-न्यायिक जांच के दौरान एकत्र किए गए फॉरेंसिक नमूनों के सुरक्षित भंडारण, सुरक्षित परिवहन और न्यायिक मान्यता को सुनिश्चित करती है। यह नवाचार इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च द्वारा वित्तपोषित दो वर्षीय अनुसंधान परियोजना का हिस्सा है। इस प्रणाली में एक विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया, जलरोधक, एकल-उपयोग वाला, अटूट लेबल शामिल है, जिसमें संस्थागत मुहर और एन्क्रिप्टेड क्यूआर कोड होता है। यह लेबल साक्ष्य कंटेनरों पर सीधे चिपकाया जा सकता है, जो भौतिक सुरक्षा, डिजिटल ट्रेसबिलिटी और टेंपर डिटेक्शन की सुविधा प्रदान करता है। यह नवाचार उन व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करता है जिनका सामना पुलिस बल को फॉरेंसिक नमूनों के संरक्षण स्थलों से पुलिस थानों या फॉरेंसिक साइंस लैब तक ले जाते समय करना पड़ता है। जैसे कि लेबल के धुंधला या नष्ट हो जाने से सूचना का नुकसान, नमूनों का आपस में बदल जाना, लंबे समय तक भंडारण के दौरान नमी या चूहों द्वारा नुकसान, और 'चेन ऑफ कस्टडी' का टूट जाना, जिससे साक्ष्य अस्वीकार हो जाते हैं और न्याय प्रक्रिया प्रभावित होती है। नया लेबल जल, साल्ट सॉल्यूशन, अल्कोहल और फॉर्मालिन जैसे सामान्य प्रिजर्वेटिव के प्रति रेसिस्टेंट है, तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों या कंटेनर से रिसाव के बावजूद स्थायित्व और चिपकने की क्षमता बनाए रखता है। क्यूआर कोड केस-विशिष्ट पहचान और सुरक्षित डेटा एक्सेस सुनिश्चित करता है। यह नवाचार भारत सरकार के डिजिटल इंडिया मिशन को मजबूत करने वाली एक पहल है। इस प्रणाली को एम्स भोपाल के फॉरेंसिक मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. राघवेन्द्र कुमार विदुआ और इंटर्न डॉ.पल्लवी सिंह ने सह-विकसित किया है। इस प्रणाली को कई परीक्षणों के माध्यम से जांचा गया।

पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक के निधन पर उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने व्यक्त किया शोक

भोपाल। पूर्व राज्यपाल एवं वरिष्ठ राजनेता श्री सत्यपाल मलिक के निधन पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पूर्व राज्यपाल श्री मलिक के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने दिवंगत आत्मा को मोक्ष गति प्रदान करने तथा शोक संतप्त परिजनों एवं उनके अनुयायियों को यह असीम कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

रक्षाबंधन को लेकर सज गए बाजार, ट्रैफिक प्लान तैयार नहीं

कोठीबाजार में सड़क निर्माण से बिगड़ सकती है यातायात व्यवस्था

बैतूल। रक्षाबंधन पर्व को लेकर बाजार सज गये हैं। जगह-जगह राखी की दुकानें लग गई है और लोगों ने खरीदी भी शुरू कर दी है। जिससे बाजारों में भीड़ बढने लगी है, लेकिन सडक़ों पर बढते ट्रैफिक को लेकर अभी तक कोई तैयारी नहीं दिख रही। दरअसल कोठीबाजार और गंज क्षेत्र के लिए यातायात विभाग ने अब तक कोई ठोस प्लान तैयार नहीं किया है। जिससे बाजार की सड़क़ों पर जाम की स्थिति बनने लगी है। खासकर कोठीबाजार क्षेत्र में, यहां वाइट टापिंग सडक़ निर्माण के कारण परेशानियां और बढ़ गई है। कोठीबाजार में लक्ष्मी चौक से कोतवाली चौक तक वाइट टापिंग सडक़ बन रही है। इस सडक़ पर सबसे ज्यादा यातायात का दबाव भी रहता है। ऐसे में सडक़ तैयार होने के कारण एक ही लेन पर आवागमन टिका हुआ है। जिससे यहां पर वाहन चालकों को बार-बार ट्रॉफिक जाम जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा

है। वैसे आम दिनों में भी इस सडक़ के हालात ऐसे ही रहते है कि कोई बड़ा वाहन आ जाये तो पूरी ट्रॉफिक व्यवस्था बिगड़ जाती है और लोगों को जाम से निकलने के लिए इधर-उधर से रास्ता तलाशना पड़ता है। बहरहाल त्यौहारी सीजन में इस सडक़ पर वाहन लेकर चलना तो दूर, पैदल भी निकलना लोगों के लिए किसी मुसीबत से कम नहीं होता है, लेकिन इसके बावजूद भी यातायात विभाग ने अब तक लोगों को जाम से बचाने के लिए कोई तैयारी नहीं की है।

सीमेंट रोड से निकाल रहे वाहन, फंसने से लग रहा जाम- कोठीबाजार में लक्ष्मी चौक से कोतवाली चौक तक बन रही व्हाइट टापिंग सड़क़ के कारण सीमेंट रोड पर ट्रैफिक भी बढ़ गया है। सीमेंट रोड पहले से सकरा है। इस पर बाइकों के खड़े होने के कारण निकलना मुश्किल हो जाता है। दूसरा रास्ता बंद होने से कार चालक यहां से निकलने का प्रयास कर रहे हैं। इसके कारण सीमेंट सड़क़ पर वाहन फंस रहे है। लेकिन व्यवस्था नहीं बन पा रही है। बता दे कि शहर के मुख्य बाजारों में कोठीबाजार सबसे व्यस्ततम मार्केट में शामिल है। यहां सीमेंट रोड पर आमदिनों में वैसे ही दोपहिया वाहन से निकलना मुश्किल होता है और त्यौहारी सीजन में तो इस सडक़ पर पैर रखने तक की जगह नहीं होती है। वाहन धीमी गति से रेंगते हैं और कई बार विवाद की स्थिति बन जाती है।

पार्किंग के लिए भूमिपूजन, लेकिन काम शुरू नहीं

कोठीबाजार क्षेत्र में पार्किंग के लिए नगरपालिका ने भूमिपूजन किया है। लेकिन अभी तक काम शुरू नहीं हो पाया है। लोग नगरपालिका परिसर में वाहन खड़ा कर देते थे, लेकिन यहां भी वाइट टापिंग सड़क़ निर्माण के कारण रास्ता वन-वे बनकर रह गया है। वहीं बीकानेर स्वीट्स के सामने थोड़ी बहुत जगह बचती है, लेकिन यहां भी छोटे दुकानदार अपनी दुकानें लगा लेते है। ऐसे में वाहनों की पार्किंग के लिए जगह नहीं मिलने से ग्राहक वाहनों पर बैठे-बैठे ही खरीदी करते है या दुकानों के सामने खड़ा कर देते है। जिससे आवागमन के लिए पर्याप्त स्थान नहीं रहता और बार-बार जाम की स्थिति निर्मित होती है। परिणाम आमजनों को परेशानियों के रूप में चुकाना पड़ता है।

ट्रॉफिक विभाग का दावा, जल्द बनाएंगे व्यवस्था

त्योहारी सीजन में बढ़ते यातायात के दबाव को लेकर ट्रॉफिक विभाग का दावा है कि जल्द ही ठोस प्लान बनाकर अमल किया जायेगा। कोठीबाजार में पॉइंट बढ़ाकर ट्रॉफिक पुलिस की ड्यूटी लगाई जायेगी। इसके अलावा मार्ग को डाइवर्ट करने के साथ-साथ बीच में पेट्रोलिंग भी बढ़ाई जायेगी। इधर गंज क्षेत्र में बाबू चौक से टांगा स्टैंड से गंज मस्जिद की तरफ ट्रॉफिक भेजा जायेगा। ट्रॉफिक विभाग के अधिकारियों का कहना है कि गंज और कोठीबाजार में कुछ जगहों को चिन्हित किया जायेगा, जिससे कि लोग वाहनों को खडा कर सके। अधिकारियों ने आमजनो से भी अपील की है कि वर्तमान में कोठीबाजार क्षेत्र में सडक़ निर्माणाधीन है, ऐसे में चारपहिया वाहनों से खरीदी करने बाजार न आये और पैदल चलकर ही मार्केट में खरीदी कर यातायात विभाग को सहयोग करे।

इनका कहना है -

चूंकि कोठीबाजार में सडक़ निर्माणाधीन है, ऐसे में यहां ट्रॉफिक जाम न हो, इसके लिए प्लान तैयार किया जा रहा है। कुछ मार्गो को डायवर्ट किया जायेगा और पाइंट बढ़ाये जायेगे। हमारी लोगों से अपील है कि वे चारपहिया वाहनों से कोठीबाजार में खरीदी करने न आए और मार्केट में पैदल की खरीदी करे, ताकि बार-बार जाम की स्थिति न बने।

- गजेन्द्र केन, यातायात प्रभारी, बैतूल

10 अगस्त से हर घर तिरंगा अभियान चलाएगी भाजपा : पंकज जोशी

आगामी कार्यक्रम को लेकर भाजपा की जिला बैठक संपन्न

बैतूल। भाजपा के आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर जिला भाजपा की महत्वपूर्ण बैठक मंगलवार को जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में संपन्न हुई। बैठक में भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं संभाग संगठन प्रभारी पंकज जोशी ने कहा कि इस बार का स्वतंत्रता दिवस भारत के विजय उत्सव और गौरव गान का सत्र है। ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव के बाद हर भारतीय की सहभागिता तिरंगा यात्रा सहित संगठनात्मक कार्यक्रमों में हर वर्ग और समाज की उपस्थिति के साथ योजना बनाने से लेकर कार्यक्रम संपन्न होने तक हो तो सफलता 10 गुना बढ़ जाती है। तिरंगा यात्रा को लेकर नवाचार पर चिंतन करें। इसके बाद कुशाभाऊ ठाकरे जी की जन्मजयंती भी बनाएंगे जो हर बूथ पर होना है। स्व.ठाकरे जी के व्यक्तित्व और संगठन क्षमता के लिए पूरे देश में मध्यप्रदेश को ठाकरे जी के प्रदेश के रूप में पहचाना जाता है। इसके साथ ही हमें अखंड भारत संकल्प दिवस मनाकर हमारी आने वाली पीढ़ी को अखंड भारत के संकल्प को दोहराने का कार्य करते रहना चाहिए। बैठक को संबोधित करते हुए जिला संगठन प्रभारी सुजीत जैन ने कहा कि भारत के युग परिवर्तन की आज तिथि है। आज ही के दिन धारा 370 से हमे निजात मिला और हमारे प्रभू श्रीरामजी के भव्य मंदिर का भूमि पूजन भी 5 अगस्त को हुआ। तिरंगा यात्रा हर कार्यकर्ता के लिए गौरव का क्षण है पहले सिर्फ सरकारी इमारतों पर तिरंगे दिखाई देते थे आज हर नागरिक तिरंगे का शान से लेकर चलता है। यात्रा के दौरान विभिन्न नवाचार के साथ हर कार्यकर्ता विकसित भारत की ओर बढ़ते हुए आन बान शान के साथ अपने सौभाग्य को लेकर श्रेष्ठता के साथ कार्य को पूरा करें। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार ने पिछले कार्यक्रमो की संक्षिप्त समीक्षा करते हुए बताया कि जिस तरह मन की बात की अपलोडिंग 100 प्रतिशत हुई और बैतूल गंज मंडल पूरे प्रदेश में प्रथम आया यह हमारे लिए प्रेरणा के साथ साथ जिम्मेदारी का काम करता है। एक पेड मां के नाम अभियान में या वन नेशन - वन इलेक्शन व अटल जी का जन्म शताब्दी वर्ष यह कार्यक्रम अभी चलने है निकट

कार्यक्रम में तिरंगा यात्रा और हर घर तिरंगा सहित अटल जी की पुण्यतिथि व कुशाभाऊ ठाकरे जी की जन्मजयंती भी हर बूथ पर मनानी है। कार्यक्रमों को लेकर मंडल स्तर पर बैठक हो जाए और योजना बनाकर हम सफलता के आयाम स्थापित करें ऐसी हम सबकी जिम्मेदारी है। आप सभी से आग्रह है कि हर कार्यक्रम में हर वर्ग की सहभागिता सुनिश्चित हो। इसकी योजना बनाकर काम करेंगे तो हम जिम्मेदारी के साथ उदाहरण स्थापित कर सकते है। बैठक का शुभारंभ पार्टी के महापुरुषों डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय व भारत माता के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर वंदे मातरम गान के साथ हुई। बैठक मे मंच पर जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार, उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे मंचासीन रहे। बैठक का समापन जन गण मन के साथ हुआ बैठक का संचालन तिरंगा यात्रा के जिला संयोजक कमलेश सिंह ने किया और अंत में आभार कार्यक्रम के सह संयोजक भास्कर मगरदे ने किया। बैठक में मन की बात कार्यक्रम की सफलता को लेकर जिला टोली व गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा का अतिथीयों द्वारा पार्टी का अंग वस्त्र पहनाकर स्वागत किया। बैठक में जिला पदाधिकारी, मंडल प्रभारी, मंडल अध्यक्ष, कार्यक्रमो के मंडल संयोजक, सह संयोजकगण, जिला पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जनपद पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिका, नगर परिषद के अध्यक्षगण, मोर्चा जिलाध्यक्ष मौजूद रहे।

ग्राम हेटी में दो भाइयों की संदिग्ध मौत से सनसनी

कुए में मिला छोटे भाई का शव, लोहे की सलाखों से लटका मिला था बड़े भाई का शव

बैतूल/मुलताई। मुलताई के ग्राम हेटी में 25 वर्षीय आशीष चौधरी की संदिग्ध मौत की गुत्थी अभी सुलझी ही नहीं थी कि आज ग्राम हेटी में आशीष के छोटे भाई मनोज पवार का शव संदिग्ध परिस्थितियों में खेत के कुए से बरामद हुआ है। 7 माह में एक ही परिवार के दो सगे भाइयों की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत की खबर लगते ही संपूर्ण क्षेत्र में सनसनी और आक्रोश का माहौल है। जिसको लेकर ग्रामीणों ने मुलताई पहुंचकर थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया को ज्ञापन सौप दोनों घटना को हत्या बताते हुए मामलों में निष्पक्ष जांच की मांग की है। घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार मुलताई ब्लॉक के ग्राम हेटी निवासी 22 वर्षीय युवक मनोज पंवार का शव गांव के एक खेत में स्थित कुएं में मिला। ग्रामीणों ने बताया की मनोज पंवार पिता हेमराज चौधरी हैदराबाद की एक निजी कंपनी में कार्यरत था और हाल ही में छुट्टी पर गांव आया था। सोमवार सुबह वह खेत की ओर गया था, लेकिन देर रात तक नहीं लौटा। परिजनों द्वारा खोजबीन के बाद उसका शव कुएं में मिला।

मकान की छत से लटका मिला था बड़े भाई का शव - मनोज पवार की संदिग्ध मौत का मामला

जिसे ग्रामीण हत्या बता रहे हैं इसलिए भी गंभीर हो जाता है कि सात महा पूर्व ग्राम हेटी निवासी मृतक मनोज के बड़े भाई आशीष पिता हेमराज चौधरी 25 वर्ष का शव हेटी ग्राम में अपने मामा महादेव पिंजारे की सीढ़ी की छत में लगी लोहे की सलाखों से लटका मिला था और इस घटना का उल्लेखनीय पहलू यह था कि मृतक के गले की रस्सी मकान की छत की सलाखों से बंधी थी वही मृतक के दोनों हाथ कमर के पीछे रस्सी से बंधे हुए थे ऐसी स्थिति में ग्रामीणों द्वारा हत्या की आशंका जताना स्वाभाविक ही था। माना जा रहा है था कि शीघ्र ही पुलिस इस मौत और हत्या के मामले की गुत्थी सुलझा लेगी किंतु सात माह बाद इस मौत का खुलासा नहीं हो सका है और इससे पहले की मौत का खुलासा हो पता छोटे भाई की फिर संदीप परिस्थितियों में मौत हो गई है।

बताया हत्या, ग्रामीणों ने की निष्पक्ष जांच की मांग - ग्राम हेटी के सरपंच सुभाष देवासे, एवं भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष राजेश हिगवे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में ग्रामीण आज मुलताई पहुंचे और थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया को ज्ञापन सौंप दोनों भाइयों की संदिग्ध मौत को हत्या बताते हुए निष्पक्ष जांच की मांग की ।थाना प्रभारी ने ग्रामीणों को ठोस कार्रवाई का आश्वासन दिया घटना की जानकारी मिलते ही मुलताई पुलिस सक्रिय हो गई है पुलिस ने हर स्तर पर जांच प्रारंभ कर दी है। एफएसएल टीम भी मौके पहुंची और घटना स्थल पर पहुंचकर संपूर्ण मामले के साक्ष्य जुटाए गए।

इनका कहना है

पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच प्रारंभ कर दी गई है। शव का पीएम कराया जा रहा है एफएसएल टीम पहुंच गई है। भाई के मौत के पुरानी डायरी भी निकाल कर संपूर्ण मामले की हर पहलू से जांच शुरू कर दी है।

- देवकरण डेहरिया, थाना प्रभारी मुलताई

पत्नी की कुल्हाड़ी मारकर हत्या करने वाला पति गिरफ्तार

बैतूल। पत्नि की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर फरार होने वाले आरोपी पति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी पति को न्यायालय बैतूल के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहाँ से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार 3 अगस्त को थाना चिचोली अंतर्गत चौकी भीमपुर में सूचनाकर्ता राहुल पिता स्व. गोरेलाल सेलुकर, (21) निवासी गौलीढाना (चिखली), जो कि मृतिका का भांजा है ने सूचना दी थी कि ग्राम पटवारीढाना चिखली निवासी सुम्मी सेलुकर की उसके पति सुखराम सेलुकर द्वारा कुल्हाड़ी से मारकर हत्या कर दी गई है। सूचना के आधार पर थाना चिचोली में आरोपी सुखराम सेलुकर के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 103(1) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना प्रारंभ की गई। घटना के बाद से ही आरोपी फरार था, जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया के निर्देशानुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी एवं एसडीओपी शाहपुर मयंक तिवारी के मार्गदर्शन में एक विशेष पुलिस टीम गठित की गई। पुलिस टीम द्वारा लगातार प्रयास करते हुए विभिन्न स्थानों पर दबिश दी गई एवं सघन तलाशी अभियान चलाया गया। टीम के अथक प्रयासों से आरोपी सुखराम सेलूकर (45 वर्ष) निवासी पटवारीढाना (चिखली) को गिरफ्तार कर न्यायालय बैतूल के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहाँ से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया।

धार जिले में खिलाड़ियों को खेल सामग्री , सुविधाएं उपलब्ध कराने संचालक खेल एवं युवा कल्याण विभाग से रखी मांग।

10 से 14 अगस्त तक जिलेभर में निकलेगी तिरंगा यात्रा : महंत निलेश भारती जिलाध्यक्ष

धार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी की मन की बात अब देश के जन मन की बात हो गई है और हमारे लिए गर्व की बात है कि पिछले तीन बार से हम मन की बात में प्रदेश में धार जिला नंबर एक रहा है और इस उपलब्धि के लिए सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र है। यह बात भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने पार्टी के आगामी कार्यक्रमों एवं हर घर तिरंगा यात्रा को लेकर आयोजित जिला कामकाजी बैठक को संबोधित करते हुए कही। भाजपा जिलाध्यक्ष भारती ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान अंतर्गत जिले के प्रत्येक मंडल एवं बूथ स्तर पर युवा मोर्चा ओर महिला मोर्चा को मिल कर 10 से 14 अगस्त तक तिरंगा यात्राएं निकाली जाएं, जिनमें आमजन की भागीदारी हो। 13 से 15 अगस्त तक घरों और दुकानों पर पार्टी कार्यकर्ता तिरंगा फहराएं। 12 से 14 अगस्त तक स्वतंत्रता संग्राम के स्मारकों, सेनानियों के प्रतिमा स्थल आदि पर स्वच्छता अभियान चलाए जाएं तथा युद्धवीरों, शहीदों के परिजनों से मिलकर उनका सम्मान करें। उन्होंने कहा कि 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका दिवस पर मौन जुलूस निकाले जाएं। विभाजन की विभीषिका को दर्शाने वाली फोटो प्रदर्शनी आदि आयोजित की जाएं, तथा उस त्रासदी को झेल चुके व्यक्तियों, परिवारों से भेंट की जाए। शहीद स्मारक पर सफाई अभियान चलाना है।

मंगलवार को भाजपा जिला कार्यालय में भाजपा की जिला कामकाजी बैठक आयोजित की गई जिसमें भाजपा संगठन जिला प्रभारी श्याम बंसल,भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती,पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर और मनोज सोमानी जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा ने बैठक को संबोधित किया। इस दौरान भाजपा जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़ तिरंगा अभियान जिला संयोजक देवेंद्र सोनाने सह संयोजक राकेश पटेल पिंटू जायसवाल मंचासीन रहें। सर्व प्रथम अतिथयों ने भारत माता व पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर माल्यार्पण दीप प्रज्वलित कर कामकाजी बैठक आरंभ किया। जिला प्रभारी श्याम बंसल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ही एक मात्र पार्टी है जो भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के ध्येय से कार्य कर रही है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विश्व में भारत का तिरंगा लहरा रहा है। आपरेशन सिंदूर के माध्यम से विश्व को हमने अपनी ताकत दिखा दी है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम भाजपा के कार्यकर्ता हैं ।

जन्माष्टमी पर प्रदेश के आदर्श संगठन को गढ़ने वाले श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे जी की जयंती है। उनकी जयंती पर प्रत्येक बूथ पर पुष्पांजलि अर्पित की जाए, साथ ही युवाओं को उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी देते हुए श्रद्धेय ठाकरे जी को विचारांजलि भी अर्पित करें।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया की जिला कामकाजी बैठक में भाजपा जिला पदाधिकारी मंडल अध्यक्ष तिरंगा यात्रा मंडल प्रभारी मोर्चा जिला अध्यक्ष समेत भाजपा वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे। विगत दिनों जिले की जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य मनोज सोमानी डॉ शरद विजयवर्गीय सरदार मेड़ा चतर सिंह ठाकुर सुभाष जायसवाल तथा रोगी कल्याण समिति सदस्य ज्ञानेंद्र त्रिपाठी का अतिथयों ने पुष्प माला से स्वागत किया। बैठक का संचालन देवेंद्र सोनाने व आभार दीपक फेमस ने व्यक्त किया।

भाजपा खेल प्रकोष्ठ के जिला संयोजक लाखनसिंह नवासा ने संचालक खेल एवं युवा कल्याण विभाग से मुलाकात में रखी खिलाड़ियों की समस्याएं

धार। आदिवासी बाहुल्य धार जिले में खेलों एवं खिलाड़ियों को खेल सामग्री एवं खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा खेल जगत से जुड़ी विभिन्न मांगों को लेकर धार जिला भाजपा खेल प्रकोष्ठ के संयोजक लाखनसिंह नवासा ने मध्यप्रदेश के संचालक खेल एवं युवा कल्याण विभाग राकेश गुप्ता (आईपीएस) से भोपाल में मुलाकात कर खिलाड़ियों की समस्याएं रखी।

नवासा ने संचालक खेल एवं युवा कल्याण विभाग को अवगत कराया कि बैडमिंटन, फुटबॉल, कराटे, हाकी, किक बॉक्सिंग, ताइक्वांडो में धार जिले के खिलाड़ी देश और दुनिया में धार का नाम रोशन कर रहे है। खिलाड़ियों को खेल सामग्री और अन्य सुविधाओं के अभाव में बहुत सी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

उन्होंने संचालक खेल एवं युवा कल्याण से आग्रह किया है कि बैडमिंटन की नर्सरी बनते जा रहे धार को एक बैडमिंटन हाल और बनवाया जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा प्रतिभाएं मध्यप्रदेश और धार को गौरवान्वित करे।तीरंदाज़ी के लिये धार - झाबुआ जैसे आदिवासी इलाको में अच्छा स्कोप है, लेकिन इस विधा की भी कोई श्रेष्ठ और व्यवस्थित शासकीय एकेडमी नहीं है। पश्चिमी मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य जिलों जैसे धार, झाबुआ, आलिराजपुर, बड़वानी, खरगोन में कही पर भी तीरंदाजी एकेडमी की स्थापना की माँग भी की ।

साथ ही खिलाड़ियों के लिए ओपन जिम, कबड्डी मैट, क्रिकेट किट और फुटबॉल नेट आदि खेल सामग्री धार जिला खेल एवं युवा कल्याण विभाग को प्रदान करने की मांग की है।

संक्षिप्त समाचार

इछावर सिविल अस्पताल एनक्यूएएस प्रमाणित

सीहोर (निप्र)। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र (एनएचएसआरसी) की टीम द्वारा सीहोर जिले के इछावर सिविल अस्पताल को 92.27 अंको के साथ एनक्यूएएस प्रमाणित किया गया है। उल्लेखनीय है कि एनएचएसआरसी की टीम द्वारा एनक्यूएएस प्रमाणन के लिए इछावर सिविल अस्पताल का निरीक्षण किया गया था। इस दौरान टीम द्वारा उप स्वास्थ्य केंद्रों में संचालित सेवाओं एवं संपूर्ण केंद्रों की मानक जांच की गई थी।

कुपोषण की सही माप हेतु महिला बाल विकास विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं शौर्या दल को दिया गया प्रशिक्षण

रायसेन (निप्र)। कुपोषण की सही माप हेतु विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों एवं शौर्या दल मास्टर्स ट्रेनर्स का एक दिवसीय प्रशिक्षण जिला स्तर पर कामधेनु परिसर में आयोजित किया गया। उक्त प्रशिक्षण में जिले के समस्त परियोजना अधिकारी, समस्त सेक्टर सुपरवाइजर, समस्त डीसी/बीसी एवं जिले में शौर्या दल अंतर्गत बनाए गए मास्टर्स ट्रेनर्स उपस्थित रहे। उक्त प्रशिक्षण में संचालनालय महिला एवं बाल विकास विभाग मध्यप्रदेश से मास्टर्स ट्रेनर्स श्री तारकेश्वर उपस्थित हुए जिनके द्वारा कुपोषण की सही माप के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में पोषण ट्रेकर एप, एमआईएस एप एवं संपर्क एप कि जानकारी आगनवाड़ी केंद्र/सेक्टर/परियोजनाएवं जिला स्तर के लॉगिन से जानकारी प्रदान की गई और समस्याओं का समाधान किया गया। प्रशिक्षण में जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री ब्रजेश कुमार जैन द्वारा शौर्यादल के मास्टर्स ट्रेनर्स को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शौर्या दल द्वारा जिले मे किए जा रहे कार्यों के संबंध मे भी जानकारी प्रदान की गई। शौर्या दल जिले मे अच्छे से कार्य करे एवं उन्हें किसी तरह से कार्य करने में समस्या आती है तो वह मास्टर्स ट्रेनर्स से संपर्क कर सकते है और यदि वहा से भी समाधान नहीं हो रहा है तो संबंधित परियोजना अधिकारी से बात कर समस्याओं का समाधान करें। जिले से प्रशिक्षण प्राप्त मास्टर्स ट्रेनर्स सेक्टर स्तर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं शौर्यादलों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

कृषि विज्ञान केंद्र हरदा द्वारा वर्षा ऋतु में आहार संबंधी सुझाव

हरदा (निप्र)। कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सुश्री जागृति बोरकर ने बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए जिले के नागरिकों को आहार संबंधी सुझाव दिये है। सुश्री बोरकर ने सलाह दी है कि वर्षा ऋतु में आहार संबंधी कुछ बातों का ध्यान रखें जैसे हरी पत्तेदार सब्जियां के अंतर्गत अरबी के पत्ते, चिरोटिया, पोइ के पत्ते आदि का उपयोग करें। जड़ वाली सब्जियां, पत्ता गोभी एवं हरे पत्तेदार सब्जी आदि के उपयोग से परहेज करें, जहां तक संभव हो पानी उपचारित ही प्रयोग करें जिसमें इसे उबालना फिटकरी से साफ करना या क्लोरीन युक्त पानी का उपयोग शामिल है। इससे संचारित रोग के होने का खतरा कम हो जाता है। सुश्री बोरकर ने बताया कि संचारित रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बैक्टीरिया वायरस या परजीवी जैसे रोग जनको के कारण हो सकते हैं। दूषित भोजन एवं पानी का उपयोग भी संचारित रोगों का प्रमुख कारण है। वर्षा ऋतु में ठंडा भोज्य पदार्थों के स्थान पर गरम भोज्य पदार्थों का उपयोग करना चाहिए वही ठंडा पानी आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक, सड़क के किनारे मिलने वाले खाद्य पदार्थ, खमीरीकृत खाद्य पदार्थ, तले हुए खाद्य पदार्थों का परहेज करना चाहिए।

बैठक के दौरान कलेक्टर ने की लोकपथ ऐप, ब्लैक स्पॉट्स, अतिक्रमण की समीक्षा अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना की अध्यक्षता में गुरुवार को सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिले के राष्ट्रीय, राज्य मार्गों, प्रमुख सड़कों एवं नगरीय क्षेत्र के चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स की विस्तृत समीक्षा की गई। कलेक्टर ने सभी संबंधित विभागों को सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ठोस कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान कलेक्टर ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स पर सुधारात्मक कार्यवाही की जाए। उन्होंने लोक निर्माण विभाग को निर्देशित किया कि लोकपथ ऐप पर दर्ज शिकायतों पर त्वरित संज्ञान लेते हुए उनका निराकरण सुनिश्चित करें।कलेक्टर ने निर्देशित किया कि राष्ट्रीय और राज्य मार्गों सहित नगरों की प्रमुख सड़कों पर स्थित स्थायी एवं अस्थायी अतिक्रमण को चिन्हित कर उन्हें हटाने की विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाए।

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने उठाए प्रदेश की विकास नीतियों पर सवाल, पूछा-मेकिंग मध्यप्रदेश कब बनेगा?

भोपाल। आज मध्यप्रदेश विधानसभा में महानगर विधेयक पर चर्चा के दौरान नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के वक्तव्य पर गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने पूछा कि मेकिंग मध्यप्रदेश की बात तो हो रही है, लेकिन इसका स्वरूप कब और कैसे साकार होगा, यह अब तक स्पष्ट नहीं है। उन्होंने कहा कि करोड़ों का निवेश आया, लेकिन यह कब और कहां आया - यह जनता को समझ में नहीं आया।

श्री सिंघार ने कहा कि सरकार किसानों को मुआवजा नही दे पा रही। सरकार कहती है कि 120 इंडस्ट्रियल पार्क बनाए जा रहे हैं - तो उद्योगपतियों को क्यों नहीं कहा जाता कि वे स्वयं बुनियादी ढांचा (इन्फ्रास्ट्रक्चर) तैयार करें? उन्होंने सुझाव दिया कि महाराष्ट्र की तरह मध्यप्रदेश में भी प्राइवेट इंडस्ट्रियल पार्क की संकल्पना पर काम होना चाहिए और जरूरत पड़े तो सरकार अनुदान दे।

श्री सिंघार ने प्रदेश के बेरोजगार युवाओं का मुद्दा भी जोरशोर से उठाया। उन्होंने कहा - जिसे सरकार आकांक्षी युवा कहती है, उसे रोजगार कैसे मिलेगा? उन्होंने बताया कि प्रदेश प्याज उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है, लेकिन निर्यात नहीं हो पा रहा। क्या इसके लिए प्रदेश में फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स नहीं लगाई जा सकतीं?

उन्होंने इंदौर के सांवेर औद्योगिक क्षेत्र का उदाहरण देते हुए बताया कि जहां पहले 500 से अधिक इकाइयाँ थीं, आज वहां केवल 100 बची हैं। उन्होंने कहा जमीनी स्तर पर कंपनियों को कोई वास्तविक प्रोत्साहन नहीं दिया जा रहा। श्री सिंघार ने कहा कि सरकार आईटी सेक्टर की बात तो करती है, लेकिन आईटी कंपनियां मध्यप्रदेश नहीं आ रहीं। बड़ी कंपनियां लगातार बंद हो रही हैं। टूरिज्म सेक्टर में गिरावट है और पर्यावरण से जुड़े मामलों में भ्रष्टाचार हो रहा है। उन्होंने मेडिकल टूरिज्म पर भी सवाल उठाया - जब मरीज इलाज के लिए प्रदेश से बाहर जा रहे हैं, तो यह कौन सा मेडिकल टूरिज्म है जिसकी बात सरकार कर रही है।

श्री सिंघार ने कहा कि सरकार जनता के पैसों से इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलप कर रही है, लेकिन इसका लाभ न जनता को मिल रहा है, न किसानों को और न ही उद्योगों को मजबूती मिल रही है। सरकार को अपनी नीतियों पर गहराई से विचार करना चाहिए और धरातल पर काम करके दिखाना चाहिए।

उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं के सुविधाजनक प्रदाय और भविष्य की मांग को केंद्रित रख तैयार करें रिडेवलपमेंट प्लान : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने निर्देश दिए हैं कि ग्वालियर स्थित गजरा राजा मेडिकल कॉलेज और जबलपुर स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज के पुनर्निर्माण और नवीन निर्माण कार्य इस दृष्टिकोण से तैयार किए जाएं कि ये संस्थान भावी स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता और मरीजों की सुविधा की कसौटी पर खरे उतरें। उन्होंने कहा कि इन मेडिकल कॉलेजों का रीडवलपमेंट केवल भवन निर्माण का कार्य न होकर एक समग्र स्वास्थ्य व्यवस्था के आधुनिकीकरण का प्रयास है, जो मरीजों को उच्च स्तरीय, सुरक्षित और सुलभ सेवाएं उपलब्ध कराने में सहायक होगा।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय में समीक्षा बैठक में कहा कि ग्वालियर मेडिकल कॉलेज के कार्यों का प्रस्ताव दो चरणों में तैयार किया जाए और एक सप्ताह के भीतर उसका प्रारूप प्रस्तुत किया जाए। उन्होंने जबलपुर मेडिकल कॉलेज के रीडवलपमेंट प्लान को दो सप्ताह में अंतिम रूप से तैयार करने के निर्देश भी दिए। उप मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि प्रस्तावों में सभी आधुनिक सुविधाओं का समावेश हो, हरियाली एवं पर्यावरण संतुलन का विशेष ध्यान रखा जाए, तथा भवनों की संरचनात्मक मजबूती और दीर्घकालिक उपयोगिता सुनिश्चित की जाए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विकास कार्यों से मरीजों को अधिक संख्या में बेड, अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर, आईसीयू और साफ-सुथरे वार्ड उपलब्ध हो सकेंगे। इससे विशेष रूप से प्रसूति और बाल रोग मरीजों को गुणवत्ता युक्त सेवाएं मिलेंगी। इसके साथ ही, न्यूरोलॉजी और न्यूरोसर्जरी में अध्ययनरत मेडिकल छात्रों को बेहतर प्रशिक्षण एवं प्रयोगात्मक सुविधाएँ भी मिलेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि नया इंफ्रास्ट्रक्चर स्वच्छता, संक्रमण नियंत्रण, वेंटिलेशन और जल निकासी जैसी मूलभूत सुविधाओं में भी महत्वपूर्ण सुधार लाएगा।

ग्वालियर के गजरा राजा मेडिकल कॉलेज परिसर में प्रस्तावित कार्यों में 1150 बिस्तरीय मातृत्व एवं शिशु चिकित्सालय, 600 बिस्तरीय न्यूरोसाइंसेस चिकित्सालय, 1400 सीट की क्षमता वाला अत्याधुनिक ऑडिटोरियम, 500 बिस्तरीय नर्सिंग छात्रावास, नया नर्सिंग महाविद्यालय, प्रशासनिक भवन, सेंट्रल ड्रग स्टोर, आवासीय क्वार्टर, टीबी एवं आइसोलेशन वार्ड, मरीजों के परिजनों हेतु डॉर्मिटरी, बहुमंजिला पार्किंग, वॉटर सप्लाई सिस्टम, सीवरेज और ईफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट, बाह्य विद्युतीकरण, बाउंड्री वॉल और आंतरिक रोड नेटवर्क का निर्माण प्रस्तावित है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि जबलपुर मेडिकल कॉलेज के रीडवलपमेंट की योजनाएं फील्ड की यथार्थ आवश्यकताओं पर आधारित हों, अधोसंरचना विकास में आधुनिक उपकरणों की उचित जगह स्थापना और हरियाली का समावेश भी किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि निर्माण कार्यों के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं की निरंतरता प्रभावित न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। बैठक में अपर मुख्य सचिव श्री संजय कुमार शुक्ला, प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, परियोजना संचालक श्री नीरज कुमार सिंह, एमडी एमपीएचएससीएल श्री मयंक अग्रवाल, एमडी बीडीसी श्री सिबी चक्रवर्ती सहित विभागीय वरिष्ठ अधिकारी और निर्माण एजेंसियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

कस्टम हायरिंग योजना से बदली किसान की किस्मत, धरम सिंह ने खड़ी की 45 लाख की संपत्ति

बैतूल (निप्र)। कृषि यांत्रिकीकरण और सरकारी योजनाओं का लाभ यदि सही दिशा में लिया जाए तो खेती केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि समृद्धि का रास्ता भी बन सकती है। बैतूल जिले के डेरी आमढाना गांव के प्रगतिशील कृषक श्री धरम सिंह इस बात का जीवंत उदाहरण हैं, जिन्होंने कस्टम हायरिंग सेंटर योजना का लाभ उठाकर खेती को एक लाभकारी व्यवसाय में बदल दिया है। कृषक श्री धरम सिंह ने बताया कि वर्ष 2019 में उन्होंने सहायक कृषि यंत्री कृषि अभियांत्रिकी कार्यालय बैतूल की मदद से कस्टम हायरिंग सेंटर खरीदा। इस योजना के तहत उन्हें यंत्र की खरीद पर अनुदान भी प्राप्त हुआ। कस्टम हायरिंग के माध्यम से उन्होंने न केवल स्वयं की खेती को आधुनिक बनाया, बल्कि अन्य किसानों को भी किराए पर यंत्र उपलब्ध कराकर आय का एक नया स्रोत बनाया। उन्होंने बताया कि इस योजना से खेती में काफी लाभ हुआ। शुरूआती दिनों में ही मेरी आमदनी में बड़ा इजाफा हुआ और धीरे-धीरे मैंने तीन ट्रैक्टर, एक थ्रेशर और पक्का मकान बना लिया। आज मेरी कुल संपत्ति लगभग 45 लाख रुपये की हो चुकी है।

पैडी राइस ट्रांसप्लांटर की खरीदी पर मिला अनुदान

कृषक श्री सिंह ने बताया कि उन्होंने धान की रोपाई को आसान और लागत प्रभावी बनाने के लिए पैडी राइस ट्रांसप्लांटर भी खरीदा है, जिस पर भी उन्हें सरकार से अनुदान प्राप्त हुआ। पारंपरिक रोपाई विधि में प्रति एकड़ 4 से 5 मजदूरों की जरूरत होती है, जिससे 3 से 5 हजार रुपये तक की लागत आती है। इसके विपरीत यह यंत्र एक दिन में 5 से 7 एकड़ भूमि में रोपाई कर सकता है और इसकी ईंधन खपत भी मात्र 1 लीटर प्रति घंटे है। इससे श्रम लागत में भारी कमी आई है और समय की बचत भी हुई है। उन्होंने बताया कि आज उनके गांव सहित आसपास के कई किसान उनके यंत्रों का लाभ ले रहे हैं और आधुनिक कृषि की ओर अग्रसर हो रहे हैं। कृषक श्री धरम सिंह ने किसानों को सशक्त बनाने हेतु चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का आभार व्यक्त किया है।

अगस्त माह में अवकाश के दिनों में बिजली बिल भुगतान केन्द्र खुलेंगे

सीहोर (निप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत 09 अगस्त (रक्षाबंधन), 16 अगस्त (जन्माष्टमी), 27 अगस्त (गणेश चतुर्थी) समस्त शनिवार (02 अगस्त, 23 अगस्त, 30 अगस्त) एवं समस्त रविवार (03 अगस्त, 10 अगस्त, 17 अगस्त, 24 अगस्त, 31 अगस्त) को बिल भुगतान केन्द्र सामान्य कार्य दिवसों की तरह कार्य करते रहेंगे।

भोपाल शहर वृत्त के अंतर्गत चारों शहर संभाग यथा पश्चिम, पूर्व, दक्षिण तथा उत्तर संभाग के अंतर्गत सभी जोनल कार्यालय और दानिश नगर, मिसरोद, मण्डीदीप में बिल भुगतान केन्द्र उक्त अवकाश के दिन भी सामान्य कार्य दिवस की तरह खुले रहेंगे। बिजली उपभोक्ताओं से अपील है कि वे राजधानी के जोनल आफिस में पीओएस (श्वशह्य) मशीन से कैश के जरिए बिल भुगतान तथा ऑनलाइन माध्यम से भी बिल भुगतान कर सकते हैं। कंपनी ने यह भी निर्देश दिए हैं कि कंपनी कार्यक्षेत्र के सभी 16 जिलों में बिजली वितरण केन्द्र/बिल भुगतान केन्द्र अवकाश के दिनों में खुले रहेंगे। इसके लिए सभी मैदानी महाप्रबंधकों को निर्देशित किया गया है।

ऑनलाइन भुगतान करें और पाएं छूट : मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा निम्नदाब घरेलू उपभोक्ताओं को ऑनलाइन भुगतान करने पर उनके कुल बकाया बिल पर 0.50 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा रही है साथ ही अधिकतम छूट के लिए कोई सीमा बंधन नहीं है। इसी प्रकार उच्चदाब उपभोक्ताओं को प्रति बिल कैशलेस भुगतान पर 100 रूपये से 1000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने उपभोक्ताओं से बिजली का बिल ऑनलाइन भुगतान करने की अपील की है। कंपनी ने कहा है कि उपभोक्ताओं को एम.पी.ऑनलाईन, कॉमन सर्विस सेन्टर, कंपनी पोर्टल portal.mpcz.in (नेट बैंकिंग, क्रेडिट/डेबिट कार्ड, यूपीआई, ईसीएस, बीबीपीएस, कैश कार्ड एवं वॉलेट आदि) फोन पे, अमेजान पे, गूगल पे, पेटीएम एप एवं उपाय मोबाइल एप के माध्यम से बिल भुगतान की सुविधा उपलब्ध है।

खरपतवारनाशी दवा से फसल प्रभावित कृषि विभाग की टीम ने किया निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। जिले के कई किसानों ने कृषि विभाग को शिकायत दी थी कि सोयाबीन की फसलों पर किए गए खरपतवारनाशी दवा के छिड़काव से फसलें क्षतिग्रस्त हो गई हैं। इन शिकायतों की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन करने हेतु कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों तथा कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन के वैज्ञानिकों की एक संयुक्त टीम ने आज सोमवार 04 अगस्त को विकासखंड ग्यारसपुर के ग्राम खिरिया, अटारीखेजड़ा, संतापुर, गुलाबगंज, यूसूफगंज, बसिया गाजर एवं मेहंदेर आदि गांवों का भ्रमण किया। टीम ने कृषक श्री गोविंद दांगी (अटारीखेजड़ा), श्री धर्मसिंह (पिपरिया जागीर), श्रीराम दांगी (खिरिया), एवं श्री रविंद्र कुर्मी (यूसूफगंज) सहित अन्य किसानों के खेतों का निरीक्षण किया और प्रभावित फसलों का प्रत्यक्ष अवलोकन कर किसानों से चर्चा की। निरीक्षण दल में सहायक संचालक कृषि श्रीमती अविना सिंह परिहार, कृषि विज्ञान केंद्र रायसेन से डॉ. पी.के. द्विवेदी, कृषि विस्तार अधिकारी सुश्री निशि जैन, श्री रविंद्र दांगी एवं श्री गोपाल बघेल सम्मिलित थे। निरीक्षण में पाया गया कि अधिकतर कृषकों द्वारा एच.पी.एम. केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, दिल्ली की बायोक्लोर नामक खरपतवारनाशी दवा का उपयोग किया गया था, जिसके दुष्प्रभाव से सोयाबीन की फसल प्रभावित हुई है। कृषकों की शिकायतों और संयुक्त दल की रिपोर्ट के आधार पर इस खरपतवारनाशी दवा के क्रय, विक्रय, परिवहन एवं भंडारण पर जिले में तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया गया है। यह निर्णय अनुज्ञापन अधिकारी एवं उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला विदिशा द्वारा लिया गया है। कृषि विभाग सभी कृषकों से अपील करता है कि किसी भी कृषि उपयोगी रसायन की खरीद करते समय विक्रेता से पक्का बिल अवश्य लें।

कलेक्टर के निर्देश पर वॉटरफॉल जाने वाले रास्तों पर लगाई गई है कर्मचारियों की ड्यूटी

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार बारिश के दौरान जिले के झरनों पर संभावित दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए इन झरनों पर पर्यटकों को जाने से रोका जा रहा है। इसके लिए जिले के अमरगढ़ वाटरफॉल, दिगंबर वाटरफॉल एवं अन्य वॉटरफाल जाने वाले रास्तों पर कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। ये कर्मचारी वॉटरफॉल जाने वाले रास्तों पर पूरी मुस्तैदी से ड्यूटी कर रहे हैं और नागरिकों एवं पर्यटकों को वॉटरफॉल पर जाने से रोक रहे हैं ताकि संभावित दुर्घटनाओं को रोका जा सके। इसके साथ ही एसडीएम, तहसीलदार एवं अन्य अधिकारियों द्वारा इन स्थलों पर निरंतर भ्रमण भी किया जा रहा है। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री बालागुरु के. ने वॉटरफॉल पर होने वाली संभावित दुर्घटनाओं को रोकने के लिए जिले के अमरगढ़ वॉटरफॉल, दिगंबर वॉटरफॉल तथा कालियादेव वॉटरफॉल पर 15 जून से 15 अक्टूबर 2025 तक पर्यटकों तथा आम नागरिकों का प्रवेश प्रतिबंधित किया है।

शालेय खेलों में जोश और उमंग का संचार, हरदा विकासखंड में खो-खो प्रतियोगिता संपन्न

हरदा (निप्र)। शालेय शिक्षा विभाग हरदा के तत्वावधान में विकासखंड स्तरीय 14 वर्ष एवं 19 वर्ष बालक एवं बालिका वर्ग की खो-खो प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का शुभारंभ ब्लॉक समन्वयक स्त्रोत शिक्षा विभाग श्री नारायण नायरे, क्रीड़ा अधिकारी श्री रामनिवास जाट, व्यायाम शिक्षक श्री राजेश बिलिया, ब्लॉक समन्वयक सुश्री सलमा खान एवं मोनिका मेहता ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर प्रतियोगिता की शुभकामनाएं देकर किया। प्रतियोगिता में हरदा विकासखंड के विभिन्न शासकीय एवं निजी विद्यालयों शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मसनगांव, सनफ्लॉवर स्कूल, संस्कार विद्यापीठ, द फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, होलीफेथ स्कूल, महर्षि ज्ञानपीठ स्कूल, जोनर एजुकेशन स्कूल, हरदा ऑफ एजुकेशन, सनरेंज स्कूल एवं एसएसजीवी स्कूल से कुल 22 टीमों ने सहभागिता की। प्रतियोगिता का संचालन निर्णायक श्री भूपेंद्र सिंह तोमर, श्री नितिन रामकुचे, श्री दर्शन खोरे एवं श्री तुलसी श्रीवास के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में 14 वर्ष बालक वर्ग में महर्षि ज्ञानपीठ स्कूल ने प्रथम स्थान, फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन ने द्वितीय स्थान तथा जोनर एजुकेशन स्कूल व संस्कार विद्यापीठ ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार 14 वर्ष बालिका वर्ग में द फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन ने प्रथम स्थान, सनफ्लॉवर स्कूल ने द्वितीय स्थान तथा संस्कार विद्यापीठ एवं जोनर एजुकेशन स्कूल ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में 19 वर्ष बालक वर्ग में द फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन ने प्रथम तथा महर्षि ज्ञानपीठ स्कूल ने द्वितीय स्थान तथा 19 वर्ष बालिका वर्ग में होलीफेथ स्कूल ने प्रथम, महर्षि ज्ञानपीठ स्कूल ने द्वितीय तथा जोनर एजुकेशन स्कूल व शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मासनगांव ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर कोच श्री आनंद तिवारी, अनीता मिश्रा, मालती कर्मा, वैशाली मंडलेकर, नारायण प्रसाद सहित सीनियर खिलाड़ी काजल मुकाती, तेजस्विनी ठाकुर, तनिष्का मालवीय, ऋषिका गार्गव आदि अपनी टीमों के साथ प्रतियोगिता में उपस्थित थे।

कलेक्टर के प्रयासों से शा.प्रा. शाला खोड़ेबोड़े को मिला नया भवन

हरदा (निप्र)। विगत माह कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन द्वारा टिमरनी वनांचल क्षेत्र के ग्रामों के दौरे के दौरान ग्राम खोड़ेबोड़े के निवासियों ने शासकीय प्राथमिक शाला के भवन विहीन होने की समस्या से अवगत कराया था। इस गंभीर मुद्दे को संज्ञान में लेते हुए कलेक्टर श्री जैन ने मौके पर ही राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल के डायरेक्टर से दूरभाष पर चर्चा की और आवश्यक पत्राचार कर शीघ्र भवन स्वीकृति की मांग की। कलेक्टर श्री जैन के तत्पर प्रयासों के परिणामस्वरूप राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल द्वारा आज शा.प्रा. शाला खोड़ेबोड़े हेतु नवीन भवन निर्माण की स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। यह निर्णय ग्रामवासियों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत सुखद एवं आशाजनक है। नवीन शाला भवन की स्वीकृति से ग्राम में शिक्षा सुविधाओं में सुधार की उम्मीद जताई जा रही है। ग्रामवासियों ने इस त्वरित कार्यवाही और सकारात्मक पहल हेतु कलेक्टर श्री जैन का आभार व्यक्त किया है।

राजा रघुवंशी के घर के बाहर महिला का हंगामा

इंदौर में बोली- भाई सचिन ने मंदिर में शादी की; डेढ़ साल का बच्चा उसी का

इंदौर (नप्र)। अपने बेटे राजा की हत्या का सदमा झेल रहा इंदौर का रघुवंशी परिवार विवादों में आ गया है। राजा के बड़े भाई पर एक महिला ने आरोप लगाते हुए कहा कि सचिन रघुवंशी ने उससे मंदिर में शादी की। सचिन और उसका डेढ़ साल का एक बच्चा भी है। इसी बच्चे को लेकर महिला मंगलवार दोपहर सचिन के घर पहुंची। महिला हंगामा करने लगी तो सचिन घर से चला गया। उसने कहा कि महिला ब्लैकमेल कर रही है। यह मामला कोर्ट में विचाराधीन है। महिला ने आरोप

लगाया कि बच्चे का डीएनए सचिन से मैच हो गया था, लेकिन कानूनी लड़ाई अब भी चल रही है।

रोकने की कोशिश की, लेकिन वो नहीं रुका- मैं चाहती हूं कि उसे और बच्चे को सचिन अपनाए और परिवार का हिस्सा बनाए। महिला ने कहा कि मैं जब सचिन के घर पहुंची तो उसकी मां ने अंदर से ताला लगा दिया और सचिन गाड़ी में बैठकर चला गया। मैंने उसे गेट के बाहर भी रोकने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं रुका।

महिला बोली- हर बार मेरा अपमान हुआ- महिला ने आरोप लगाया कि सचिन और उसके परिवार ने जानबूझकर उसे और बच्चे को समाज से अलग-थलग करने की कोशिश की। उसने कहा- मैंने कई बार कोर्ट का सहारा लिया, लेकिन हर बार मेरा अपमान हुआ। अगर सचिन ने शादी को स्वीकार कर पूरे सम्मान के साथ निभाया होता, तो आज ये नौबत नहीं आती।

शादी के वीडियो और रस्मों के पुख्ता सबूत- महिला ने यह भी दावा किया कि उसके पास सचिन के साथ शादी के वीडियो और मंदिर में हुई रस्मों के पुख्ता सबूत हैं, जिन्हें कोर्ट में भी पेश किया है।

रातीबढ़ से मुगालिया छाप तक 10 किमी अतिक्रमण हटेगा

भोपाल कलेक्टर ने निरीक्षण किया; स्कूल, गोशाला-आंगनवाड़ी केंद्र भी देखा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रातीबढ़ से मुगालिया छाप तक 10 किलोमीटर सड़क किनारे का अतिक्रमण हटेगा। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने एसडीएम से कार्रवाई करने को कहा। कलेक्टर मुगालिया छाप में स्कूल, गोशाला और आंगनवाड़ी केंद्र का निरीक्षण करने पहुंचे थे। तभी उन्हें सड़क किनारे अतिक्रमण दिखाई दिया। कलेक्टर ने शासकीय हाई सेकंडरी स्कूल, गोशाला एवं आंगनवाड़ी केंद्र में व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

मुगालिया छाप में निरीक्षण के दौरान बच्चों की पढ़ाई के बारे में टीचर से जानकारी लेते कलेक्टर।

बच्चों से पूछा- समझ में आ रहा है?- कलेक्टर ने स्कूल में निरीक्षण के दौरान बच्चों से पढ़ाई के बारे में भी पूछा। कहा कि समझ में आ रहा है कि नहीं? इस पर बच्चों ने हां में जवाब दिया। गोशाला में कलेक्टर ने गायों को चारा भी खिलाया।

स्कूल की बिल्डिंग 15 दिन में मरम्मत कराएं- निरीक्षण के दौरान कलेक्टर सिंह ने शासकीय हाई सेकंडरी स्कूल का निरीक्षण भी किया। उन्होंने स्कूल के प्राचार्य को निर्देश दिए कि बारिश के मौसम में किसी भी जर्जर कक्षा में शिक्षण कार्य न किया जाए। प्राचार्य ने जानकारी दी कि स्कूल बिल्डिंग में कोई भी कक्षा जर्जर नहीं है। सभी कक्षाएं पक्के और सुरक्षित भवनों में संचालित हो रही हैं। कलेक्टर ने जर्जर हिस्से में कक्षा न लगाने और 15 दिन में मरम्मत कराने की बात कहीं।

गोशाला का काम लेट तो होगी कार्रवाई- कलेक्टर ने मुगालिया छाप में निर्माणाधीन गोशाला का निरीक्षण किया। उन्होंने जनपद पंचायत सीईओ शिवानी मिश्रा को निर्देश दिए कि गोशाला का निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण कराया जाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि समय-सीमा में कार्य पूर्ण न होने की स्थिति में संबंधित अधिकारियों एवं सरपंच के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

भोपाल में बिना हेलमेट पेट्रोल देने पर होगी कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बिना हेलमेट के पेट्रोल नहीं देने का आदेश 1 अगस्त से लागू हो गया। बावजूद कई पेट्रोल पंप ऐसे हैं, जहां बिना हेलमेट के ही लोगों की गाड़ियों में पेट्रोल भरा जा रहा है। इस पर लगाम कसने के लिए खाद्य विभाग अब पंप पर लगे सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग देखेगा। इसके लिए टीमें भी बनाई गई हैं।

बता दें कि कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने 30 जुलाई को आदेश दिए थे। 31 जुलाई को पेट्रोल पंप संचालकों के पास आदेश पहुंचे और 1 अगस्त से लागू कर दिया। पहले दिन सख्ती, समझाइश और कार्रवाई तीनों ही हुईं। जुर्माने या पंप सील होने की कार्रवाई के डर से अधिकांश पंप पर बिना हेलमेट पेट्रोल नहीं दिया गया, लेकिन अगले ही दिन आदेश हवा-हवाई हो गया। तीसरे और चौथे दिन भी यही हालात नजर आए। फूड कंट्रोलर चंद्रभान सिंह भदौरिया ने बताया कि पंप पर लगे कैमरों की वीडियो रिकॉर्डिंग निकाल रहे हैं। इसके आधार पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

विधानसभा में बोले सीएम यादव

मेट्रोपॉलिटन सिटी में इंडस्ट्रियल बेल्ट तय करना प्रायोरिटी

इंजीनियरिंग कॉलेजों में आईटी पार्क, उज्जैन में इसरो जैसा रिसर्च सेंटर और साइंस सिटी बनाएंगे

भोपाल (नप्र)। विधानसभा में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा- मेट्रोपॉलिटन सिटी में हमारी प्रायोरिटी इंडस्ट्रियल बेल्ट तय करने की है। सरकार ने तय किया है कि रोजगारपरक उद्योग लगाएंगे। महिला कर्मचारियों को 6000 और पुरुष कर्मचारी को 5000 रुपए इंसेंटिव दिया जाएगा। जहां इंडस्ट्री लगती हैं, वहीं हॉस्टल बन जाएंगे तो महिलाएं रात में भी काम कर सकेंगी। इसके लिए सरकार श्रम विभाग के माध्यम से कानून में बदलाव कर रही है।

उन्होंने कहा- इंजीनियरिंग कॉलेज के कैंपस में आईटी पार्क बनाने पर काम करेंगे। इसरो की तर्ज पर मध्यप्रदेश के उज्जैन में एक रिसर्च सेंटर बने, इसके लिए भी काम शुरू कराया है। उज्जैन में साइंस सिटी भी बनाई जा रही है। फिलहाल, मानसून सत्र की कार्यवाही भोजनावकाश के लिए दोपहर 3.45 बजे तक स्थगित कर दी गई है।

ग्वालियर के किले में होटल नहीं खुलेगा: संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी- संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा- ग्वालियर के किले में होटल नहीं खुलेगा। पर्यटन विभाग द्वारा एक एमओयू किया गया है, जिसके माध्यम से ग्वालियर के अलग-अलग महलों का संरक्षण और संवर्धन किया जाएगा।

जबलपुर में विक्टोरिया हॉस्पिटल के अधिकारी की शैक्षणिक योग्यता फर्जी- विधायक लखन घनघोरिया ने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव में कहा- जबलपुर में विक्टोरिया हॉस्पिटल के अधिकारी की शैक्षणिक योग्यता फर्जी है। उपमुख्यमंत्री राजेंद्र कुमार शुक्ला ने कहा कि जांच रिपोर्ट में

संबंधित व्यक्ति की शैक्षणिक योग्यता फर्जी नहीं बताई गई है। मंत्री के जवाब से असंतुष्ट कांग्रेस ने सदन से वॉक आउट कर दिया।

बहुत ज्यादा भीड़ होने की वजह से हादसा हो जाता है: विधायक सुदेश राय- कुबेरेश्वर धाम में दो लोगों की मौत के मामले पर सीहोर विधायक सुदेश राय ने कहा- भीड़ प्रबंधन में कोई कमी नहीं थी। बहुत ज्यादा भीड़ होने की वजह से हादसा हो जाता है। मैं जाकर देखता हूं कि क्या हुआ है। कांग्रेस विधायक सेना महेश पटेल ने कहा- क्या सरकार पुरानी पेंशन योजना लागू करने पर विचार कर रही है? इसके जवाब में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि इस तरह का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है। कांग्रेस विधायक पंकज उपाध्याय ने ग्वालियर किले में होटल खोलने के प्रस्ताव का विरोध किया। कहा- सरकार ऐतिहासिक विरासत को बर्बाद करने जा रही है। कई जमीनें हैं, जहां होटल खोले जा सकते हैं। बीजेपी विधायक अभिलाष पांडे ने कहा- इस किले में सिखों का पवित्र स्थल गुरुद्वारा दाता बंदी छोड़ है। पुराने शासकों की छतरियां हैं। इस ऐतिहासिक किले में कोई होटल न खोला जाए।

मानसून सत्र की कार्यवाही शुरू होने से पहले आज झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन और मध्यप्रदेश के पूर्व सीएम डीपी मिश्र को श्रद्धांजलि दी गई। दो मिनट का मौन रखने के बाद सदन 5 मिनट के लिए स्थगित रखा गया।

बरैया बोले- झुग्गियों में कैसे विकास कार्य किए जाएंगे- कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया ने कहा कि गांव से लोग पलायन करके शहरों में आते हैं। यहां झुग्गी बनाकर रहते हैं। इस एक्ट में कोई बात नहीं कही गई है कि ऐसे लोगों के लिए कैसे विकास कार्य किए जाएंगे। किस तरह से उन्हें व्यवस्थित किया जाएगा। विधायक नीना वर्मा ने इस एक्ट के दायरे में आने वाले उनके क्षेत्र में पेयजल समस्या और गरीबों श्रमिकों के लिए आवास का मामला मजबूत करने को कहा।

शिक्षा मंत्री बोले- अगर स्कूल फिट नहीं, तो मान्यता होगी रद्द- शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि नियमों का पालन करना ही होगा, वरना स्कूलों की मान्यता रद्द कर दी जाएगी। उन्होंने बताया कि कई स्कूल मान्यता के मानकों पर खरे नहीं उतर पाए। ऐसे मामलों में बच्चों के भविष्य को देखते हुए एक साल की सशर्त मान्यता दी गई है। हमने कहा है कि आप एक साल में सभी मानक पूरे करें। लेकिन यदि ऐसा नहीं हुआ, तो अगले साल मान्यता नहीं मिलेगी। बता दें कि 4,820 स्कूलों ने मान्यता के लिए आवेदन ही नहीं किया।

कांग्रेस विधायक बोले- उज्जैन को मेट्रोपॉलिटन सिटी से बाहर निकाले- मेट्रोपॉलिटन सिटी एक्ट पर कांग्रेस विधायक महेश परमार ने कहा कि नगरों का विकास होना चाहिए। महानगर बनना चाहिए, हमें इस पर एतराज नहीं है। बड़े उद्योग धंधे आना चाहिए। सरकार के पास इंदौर-उज्जैन के बीच कितनी सरकारी जमीन बची है। जमीन कहां से आएगी। आखिर इसमें उपयोग तो किसानों की जमीन का ही होगा। किसानों की जमीन का अधिग्रहण बाजार मूल्य से किया जाना चाहिए। उज्जैन को मेट्रोपोलिटन सिटी से बाहर निकाला जाए। उज्जैन के विकास के लिए सरकार अलग से फंड का इंतजाम करें।

मंत्री परमार बोले- मेट्रोपॉलिटन सिटी से गांव भी होंगे डेवलप

उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि हमारी सरकार का विजन है कि जो बड़े शहर है, उनके साथ जो छोटे शहर जहां औद्योगिक क्षेत्र को मिलाकर मेट्रोपॉलिटन सिटी डेवलप की जाएगी। यह बहुत अच्छी योजना है। इससे महानगरों को जितना विकास होगा वो नीचे गांवों तक जाएगा। रोजगार की संभावना बढ़ेगी।

नेता प्रतिपक्ष बोले- कंपनियों को प्रोत्साहित करने की जरूरत

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि उद्योगपतियों से खुद अपना इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलप करने के लिए कहा जाना चाहिए। इसके लिए अनुदान दे सकते हैं। महाराष्ट्र में इस पर काम करके प्राइवेट इंडस्ट्रियल पार्क बनाए जा रहे हैं। उन्होंने मध्यप्रदेश के बेरोजगारों का मामला उठाते हुए कहा कि जिसे सरकार आकांक्षी युवा कहती है, उसे कैसे रोजगार मिलेगा? प्याज उत्पादन में हम दूसरे नंबर पर हैं, उसका निर्यात नहीं कर पा रहे हैं। क्या इसके लिए फूड प्रोसेसिंग यूनिट नहीं डाली जा सकती है?

कटारे बोले- महिलाओं की आड़ में राजनीति कर रहे बीजेपी नेता

उप नेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने कहा- मेरे ऊपर लगाए जा रहे रेप केस के आरोपों की पहले भी जांच हो चुकी है। ये जांच बीजेपी सरकार के कार्यकाल में ही हुई थी। इस बार भी इसमें मैं पूरा सहयोग करूंगा। कटारे ने कहा- बीजेपी के नेता गले तक भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। उनके खिलाफ मैंने आवाज उठाई तो सरकार इस पुराने मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट गई है। बीजेपी के उन नेताओं को शर्म आनी चाहिए, जो महिलाओं की आड़ में इस तरह की राजनीति करते हैं।

विधानसभा में ये विधेयक पेश

- मध्यप्रदेश जन विश्वास उपबंधों का संशोधन विधेयक 2025
- मध्यप्रदेश मोटरयान कराधान संशोधन विधेयक 2025
- मध्यप्रदेश माध्यमस्थ अधिकरण संशोधन विधेयक 2025
- कमजोर वर्गों के लिए विधिक सहायता तथा विधिक सलाह निरसन विधेयक 2025

पंचायत, ग्रामीण विकास एवं श्रम मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने भोपाल हाट में आजीविका मिशन की दीदीयों द्वारा बनाई गई राखियों के मेले का शुभारंभ एवं अवलोकन किया।

कुबेरेश्वर धाम में भगदड़, 2 की मौत

एमपी के सीहोर में कांवड़ यात्रा में शामिल होने पहुंचे थे, भीड़ में दबने से जान गई

भोपाल/सीहोर (नप्र)। सीहोर के कुबेरेश्वर धाम में मंगलवार को भारी भीड़ के चलते भगदड़ में दो लोगों की मौत हो गई। 8 से 10 श्रद्धालु चक्कर और घबराहट की शिकायत के बाद अस्पताल पहुंचे हैं। जिनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं की गई है। प्रदीप मिश्रा बुधवार को कुबेरेश्वर

धाम से चितावलिया हेमा गांव तक कांवड़ यात्रा निकालने वाले हैं। इसमें शामिल होने के लिए एक दिन पहले ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। भंडारे, ठहराव और दर्शन के लिए जगह कम पड़ने लगी, जिससे भीड़ बेकाबू हो गई। कई स्थानों पर अफरातफरी का माहौल बन गया। तीन लोग नीचे गिर गए। इनमें से दो की दबने से मौत हो गई।

घायलों को अस्पताल ले जाने में लगे डेढ़ घंटे- कुबेरेश्वर धाम के आसपास इतनी ज्यादा भीड़ है कि घायलों को जिला अस्पताल ट्रॉमा सेंटर लाने में डेढ़ घंटे का समय लग गया। घटना के 3 घंटे बाद भी स्वास्थ्य विभाग और जिला प्रशासन दोनों मृतकों की पहचान नहीं कर सका है। जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ. प्रवीर गुप्ता ने हादसे को लेकर कुछ भी कहने से मना कर दिया।

विधायक बोले- प्रशासन ने पूरे इंतजाम किए, लेकिन भीड़ बढ़ी- मानसून सत्र के लिए भोपाल पहुंचे सीहोर विधायक सुदेश राय ने हादसे को लेकर कहा, बेहद दुख की बात है। मैंने मुख्यमंत्री मोहन यादव जी को भी इसकी जानकारी दी है। कुबेरेश्वर धाम में बुधवार को कांवड़ यात्रा है। इसमें शामिल होने दूसरे राज्यों से भी श्रद्धालु यहां आ गए हैं। पुलिस और प्रशासन ने अपनी ओर से सभी इंतजाम कर रखे हैं। भीड़ ज्यादा होने के चलते हादसे हो जाते हैं। मैं मौके पर पहुंचकर देखूंगा कि अनहोनी कैसे हुई।कुबेरेश्वर धाम में भगदड़ में घायल महिला को अस्पताल में ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है। 8 से 10 घायलों को सीहोर के अस्पताल ले जाने की जानकारी सामने आई है।तीन लोगों को अस्पताल में लाया गया था। यहां दो को मृत घोषित कर दिया गया।

4 हजार श्रद्धालुओं के लिए व्यवस्था- प्रशासन और आयोजकों ने दावा किया था कि 4 हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं के ठहरने की व्यवस्था नमक चौराहा, राधेश्याम कॉलोनी, बजरंग अखाड़ा, अटल पार्क, शास्त्री स्कूल, लुर्द माता स्कूल और सीवन नदी के पास की गई थी। पूरे सावन मास प्रसादी वितरण की तैयारी भी की गई थी, लेकिन एक दिन पहले ही भीड़ का दबाव बढ़ने से व्यवस्था टूट गई।

भोपाल में 9 डॉक्टर समेत 32 स्वास्थ्य कर्मियों को नोटिस

अस्पतालों में समय से नहीं आता स्टाफ; सीएमएचओ ने कहा- आपकी लापरवाही से मरीज परेशान

भोपाल (नप्र)। भोपाल में स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की एक हैरान कर देने वाली तस्वीर सामने आई है। राजधानी के दो बड़े सरकारी अस्पतालों- हथाईखेड़ा सिविल अस्पताल और गोविंदपुरा सिविल डिस्पेंसरी में स्टाफ की बड़ी लापरवाही उजागर हुई है। एक तरफ जहां हथाईखेड़ा में सीएमएचओ कार्यालय के औचक निरीक्षण में 9 डॉक्टरों समेत 25 कर्मचारी अपनी ड्यूटी से गायब मिले। गोविंदपुरा में भी 7 स्वास्थ्यकर्मियों को एक गंभीर घटना के चलते कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

इन लापरवाहियों का सीधा खामियाजा मरीजों को भुगतना पड़ रहा है। सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा ने सभी 32 कर्मचारियों को नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा है, साथ ही कड़ी कार्रवाई की चेतावनी भी

दी है। उन्होंने कहा कि अब अस्पतालों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सुबह 9:20 बजे गायब मिले 7 कर्मचारी- भोपाल के गोविंदपुरा स्थित सिविल डिस्पेंसरी के सात कर्मचारियों को सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा ने कारण बताओ नोटिस जारी किया है। नोटिस उन कर्मचारियों को भेजा गया है जो गोविंदपुरा सिविल डिस्पेंसरी में कार्यरत हैं, लेकिन समय से ड्यूटी पर नहीं आते हैं।

विधानसभा में मप्र में संचालित 108 एम्बुलेंस सेवाओं को लेकर बड़ा खुलासा

भोपाल (नप्र)। मप्र में संचालित 108 एम्बुलेंस सेवाओं को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। इन एम्बुलेंस का श्रमिक ठेका पंजीयन नहीं हुआ है। यह जानकारी पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री प्रहलाद पटेल ने सोमवार को विधानसभा में दी।

मंत्री पटेल ने बताया कि इस सेवा का संचालन कर रही मां अंबे कंपनी ने पंजीयन के लिए जो दस्तावेज जमा किए थे, उनमें गंभीर खामियां थीं। इस कारण पंजीयन निरस्त कर दिया गया। बिना वैध श्रमिक पंजीयन के संचालन करने पर कंपनी के विरुद्ध भोपाल जिला न्यायालय में प्रकरण संख्या 8394/24 के तहत मामला दर्ज कराया गया है।

कांग्रेस विधायक जयवर्द्धन सिंह ने यह सवाल उठाया था। मंत्री द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार,

मां अंबे कंपनी को 3 वर्षों में इस सेवा के लिए 900 करोड़ का भुगतान किया गया है। इसका अर्थ यह है कि औसतन एक एम्बुलेंस पर 45 लाख रुपए खर्च किए गए, जबकि एक एम्बुलेंस की अनुमानित कीमत लगभग 15 लाख रुपए होती है।

बेरोजगार कैसे हो गए 'आकांक्षी युवा'- मध्य प्रदेश सरकार ने बेरोजगार युवाओं को 'आकांक्षी युवा' नाम देने का निर्णय क्यों लिया? इस पर कांग्रेस विधायक प्रताप ग्रेवाल के सवाल के जवाब में मंत्री गौतम टेटवाल ने बताया कि एमपी पोर्टल पर आवेदन करने वाले युवाओं को बेरोजगार नहीं बल्कि पंजीकृत आवेदक माना गया है, इसलिए उन्हें आकांक्षी युवा कहा जा रहा है। हालांकि आकांक्षी आंकड़ों में बड़ा विरोधाभास सामने आया है। 2018 में इनकी संख्या 26.82 लाख थी, जो 2019 में बढ़कर 31.55 लाख हो गई।

फिर 2020 में घटकर 24.72 लाख रह गई। 2023 में आकांक्षी युवाओं की संख्या 33.13 लाख थी, लेकिन 2024 में यह घटकर 26.18 लाख हो गई। इस अवधि में केवल 52,000 युवाओं को ही रोजगार मिला। मंत्री ने बताया कि पुणे की यशस्वी कंपनी को 2021 में 25,000 युवाओं को रोजगार दिलाने का ठेका दिया गया था। कंपनी ने 11,680 युवाओं की सूची प्रस्तुत की, जिनमें से केवल 4,433 ही पात्र पाए गए। इसके बदले कंपनी को 4.17 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया।